entering there is

भेर सम्बन् २४०५ कि. २०१७ ई. १८६० - *उस्मेल कोर अधन्ती*

> मुद्रकः—
> श्री दैवदत्त शास्त्री, विद्याभास्करः विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान प्रैः साधुत्राश्रम, होशिश्रारपुर ।

पास्ताविक कथन

सामाजिक-जीवन की गाहों को ठॉक रूप में चलाते के लिये दो मार्ग हैं—प्रागार धर्म घोर घणपार धर्म —ग्रहुस्य धर्म घोर मांगु धर्म—राजनीति घोर धर्म-सीति।

नियं समय मनुष्य का सामाजिक कव नहीं होता (तुनल-समय होता है) सो उस समय न राजनीति होती है और न ही धर्मनीति। जब ममाज में दोष बढ़ते हैं तो किट सामाजिक-एव होना प्रारम्भ हो जाना है। वर्ष की स्वापना होती है और उमका मुख्या 'कुलबर' कहनाता है। बह मुख्या धार्म को 'हुकार' की दर्द्यनीति पर पत्राना है। आप बाबर धोर दोष बढ़ते हैं तो 'मकार' की दर्द्यनीति प्रवृत्त होती है, दन प्रकार दोषों के बड़ने हुए कम में 'पिक्ववर' गीति, 'परिभाष' गीति, 'मण्डल-बन्ध'-गजर-बन्दी 'पारए'= और धौर 'राबिदेद'-धंगोदेद की मीतिम् प्रवृत्त होती है। के में राजनीति की गीतिष्ठ है।

राष्ट्रनीति स्थापित होने पर प्रमेनीति स्थापित होती है। यह भी एक सामाजिक स्त है परन्तु प्रत्यार-धर्म पर प्रस्ते वाल सापर्थी का। इस सामाजिक मंगहन की इस मौतिए होती है। वे मौतिए, दरहनीतिए नहीं, प्रीष्ट्र प्रायक्षित्त-लोतिए है। वेब, याचार् मिना साला है पर्धर प्रायक्षित, महर्च-न्ययेकी इस्साप्त्रीक सम्म कर पहण दिया जाता है, माधु-पूर्वों की मौतिए, जो हुई, यहां बसाए-द्याव देशर काम सर्वांति का प्रश्न ही जाता नहीं होता, हा! परिवाह दोवा, देश हो

क्षणिक्य दंबनीई यशस्यान में जला—कक्षारि के सक्षणि के दिवसिक के विद्यालय क्षणित के स्वारणिक क्षणित क्षणित के स्वारणिक के स्वारण



रंबर-विणिक्तरात्रों मोत्रखस्स पहो, तथी पहो नासि । वसी प पहाणंगं पच्छितं, जं च नाणस्स ॥ गरी परणं, नस्स वि नेज्वाणं, परण-सोहणत्यं च । चिह्नतं, तेण तयं नेयं मोत्रखित्रणाज्यस्तं॥



सान बन्नापुर्वेह निहित्सा करता। सकता है ऐसा नभी ती हैं जिन कि उस में वीर्याचार की कभी हैं हैं। सन्ता निहित्सा कहीं कहीं-न-कही। पसान पानी होना भी सम्भन है जिस में वार्यिन चार के दोग भी लग जाते हैं।

नीका द्वारा नदी को पार करना. नपी में लपु-श्राहादि की निवृत्ति के लिगे जाना इत्यादि अपवादों में शक्ति-हीनता की तो कोई वात नहीं, परन्तु इन सन में असावणानी तो हो ही सकती है जो कि चारित्राचार के दोप हैं जिन का विउस्मानामक पान्धवां प्रायश्चित्त लिया जाता है। जितनी असावधानी उतना उसका प्रायश्चित्त, एक साधक को लेना ही चाहिये। जानावलम्बन, दर्शनावलम्बन एवं चारित्रावलम्बन से भी अपवाद-मार्ग में दोप-सेवन हो जाते हैं अर्थात् ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की अपनी एवं दूसरों की वृद्धि के लिये उन दोप-युक्त कार्यों को करना पड़ जाता है, परन्तु ऐसा करने वाला साधक यदि अतिपरिणामक है अथवा अपरिणामक है तो वह विपय-दोप का पात्र है और यदि साधक परिणामक है तो वह किपय प्रायश्चित्त वाला माना जाता है जिस के लिये उसे आलोचना-मात्र करनी होती है जो कि प्रथम श्रेणी का प्रायश्चित है, परन्तु किपय का पात्र है हों उनका प्रायश्चित्त उसे पृथक् रूप.

जैसे कि साधु महाराज का व्याख्यान कराने के लिये जीव जन्तुश्रों से युक्त स्थान साफ करवाना, दरी विछाना, चान्दनी लगवाना ह्वा में चान्दनी का हिलना, द्रियों के नीचे जीवों का दव जाना श्रीर साधु महाराज का वहां व्याख्यान करना श्रादि कार्य।

२. कप्पिय=कल्पनीय श्रर्थात् करने योग्य कार्य।

से नेना होना है। किन्तु धतिपरिणामक के जो दिष्यया दोष हैं उनका प्रायध्वित तो बहुत प्रियक है भीर ध्यरिणामक को भी प्रियक प्रायध्वित नेना होता है।

एक ही प्रकार के दोप-तेयन के पीढ़े निप्न-निप्त भागना के बापार पर उनका प्रापत्त्वित भी निप्न-निप्त होता है और कि शरीर की घोषा-साई की एक ही दिया है, परन्तु इस के पीढ़े निप्त-निष्ठ भागना होने पर प्रलग-प्रलग प्रापत्त्वित है। निप्ताय मूत्र के सीसरे उद्देश्य में धौर चोगे उद्देश में इसके तिए नणु-नास का प्रापत्तित है, पर्वरहावें उद्देश के मूत्र १०वं बीर १०४ में नणु-चोमानों बीर एड्डे एवं साववें उद्देश में मूहनौमानी प्राप्तित का विधान किया एक है।

- र, को पूर्वक कार्य कार्य के की दीव रें।
- २. निसीय प्र ३ । २०-

ेर विकान भागवते पात श्रीकीक्षर-शिवदेश था उतिहीदग-विवरेश का एक्टीकेश का पर्वेत्रका का, उन्होंकेट का पर्वेश्वर्ट मा साहकर, स्ट्रीकेशको साहक्षर मानिक परिदारदारी उत्पादके।

ितालिक मृत्र ४ । ४--

वि विषय् काम्यास्त्रस्य यात् ग्रंकीवरा-विषयेत् या स्विकीदरा-विषयेत्रस्य का प्रभाविषयः या प्रवेशका स्वाः स्वत्वेशके सा प्रवेशके सा स्वारत्स्यः, ते सेवसाले स्ववंश्य स्वाधित वर्षस्यस्यानं स्वयास्त्रे।

finche un ta s to-

के विवरण कामकीयाम मामानियान का शायनी पाप बीन्हीयक विपरेगा का क्षित्रीयकियाँ का कन्तीनेशन का क्षीयक का, विपरेगा के प्रोक्ति का सावश्वत, में श्रेषणणी कावश्वत कारकार Herrica est sit i seriem

ो भिक्त किर्यान्यनिष्यः व्यापणी पाप् भीकोरम विषयेण पा अभिगोदमनिष्येण या सन्देशिक या प्रभीष्का पा, र दोलीके वा प्रभोवीती या मादकार, ते में सामी व्यापकार वा स्मामियं परिवारसमी असाह्ये ।

निशीम सूप ६ । २८-

जे भित्रम् मादम्मामस्य भेहुण-पटिपाए खणमो पाए मीणोद्य-नियरेमा ना उसिमोदग-वियरेम वा उन्होलेज ना प्रभेएज ना, जन्होलेतं वा प्रोखंत वा सादजार, तं सेनमामे खान्जार चाउम्मा-

: तियं परिहारद्वागं श्रणुग्वाद्यं । निशीय सूत्र ७ । १८—

जे मिक्लू माउग्गामस्स मेहुग्-पिटयाएं ग्रन्नमन्नस्म पाए सीग्रोदग-वियडेग् वा, उसिगोदग-वियडेग् वा उच्छोलेज्ज वा पधीएज्ज वा, उच्छोलंतं वा पधीग्रंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाग् ग्रावज्जइ चाउग्मा-सियं परिहारहाणं स्रगुर्वाइयं। (६) सावपानी रराठे हुए भी उस कृतयोगी की, प्रपयाद सेवन करने के पीछ क्या भावना काम करती है ?

इन वातों का विचार कर लेने पर तब कहीं जा कर प्रायम्बित का निर्णय हो पाना है 10

यत सामान्य एत से जिला-किस दीप का क्यान्यया प्रायदिवत होता है इस प्रकार देस प्रायदिवसीं का यर्णन क्याम: किया जाता है—

पायच्छितं दसियहे पगणते तं जहा— (१) मालोगणारिहे, (२) पटिककमणारिहे, (३) ततुभयारिहे, (४) विद्यमारिहे, (४) विद्यमगारिहे, (५) तवारिहे, (७) छेयारिहे, (=) मृलारिहे, (६) मणवद्ठप्पारिहे, (१०) पारंचियारिहे॥ —भगवती गुण २४।ऽ।६॥

१. आलोचना-

काणिका से जाता, नेत् छपडनमा निरह्मास्स । ब्रह्मात्मस विवादी, प्रश्नी खालीवना मणिया॥ (क्षास्य क्र)

परिणामक द्वारा जो कल्य कार्य उपयोगपूर्वक निर्तिनार-हप से किए जाते हैं, छमस्य होने के नाते संभागित अतिक्ष स्रादि की विभेष-शुद्धि के लिए साधक स्रालोचना करता है जो कि प्रथम प्रायश्चित है। जैसे कि—

1. भिरत् य गणाश्ची श्रवकम्म परपासंड-पडिमं उवसंपजिताणं विहरेडमा, से य इच्छेडजा दोच्चं पि तमेव गणं उचसंपज्जिताणं विहरित्तणः, निध्यणं तस्स तप्पत्तियं केइ छेण् वा परिहारे वा नन्नत्य एगाण् श्राकोयणाणः । —व्यवहार सन्न १।३२॥

जो साघु अपने गण सम्प्रदाय का त्याग कर अन्य धार्मिक सम्प्रदाय अङ्गीकार करके विचरे और पुनः पहली सम्प्रदाय में श्राना चाहे, तो उसे कोई दीक्षा-छेद व पारिहारिक तप का प्रायश्चित्त नहीं श्राता केवल एकमात्र उसे श्रालोचना करनी होती हैं। [क्योंकि उसने अपने संयम में कोई दोप नहीं लगने दिया है।]

- (२) निग्गंथं च ग्रं राश्रो वा वियाले वा दीहिषिद्दी लूसेउजा; इत्थी वा पुत्सिस्स श्रोमञ्जेज्जा, पुरिसो वा इत्थीए श्रोमञ्जेज्जा, एवं से कप्पद्व, एवं से चिद्वह, परिहारं च से ग्र पाडग्रह—एस कप्पे थेर-किप्पयाग्रं; एवं से नो कप्पद्व, एवं से नो चिद्वह, परिहारं च ग्रो पाउग्रह—एस कप्पे जिय्किप्पयाग्रं।

 —व्यवहार सूत्र ५।२१॥
- _ साघु को रात्रि व सायं के समय किसी विप-घर सर्प ने काट खाया हो, उस समय उपचार जानने वाले किसी पुरुप का योग न मिले श्रीर स्त्री का मिलता हो, तो स्त्री के पास से उपचार करा लेवे; इसी प्रकार साच्त्री को काटा जाने पर उसे उपचार जानने वाली स्त्री का योग न मिले श्रीर पुरुप का मिलता हो, तो वह साच्यी उस पुरुप से उपचार करा लेवे,

इस प्रकार करना उन्हें कलाता है भीर इस प्रकार किया जाता है, उन्हें किसी प्रकार का पारिहास्कि तप भागरिन्त नहीं भाता—यह स्पविर-कलियों की मर्योदा है। परन्तु जिन-कली सापु की ऐसा परना नहीं कल्यता है भीर न वे ऐसा करते हैं, न करने पर उन्हें कोई पारिहास्कि प्रायश्चित नहीं माता। (कल्य-प्रायश्चित, केयन भानीचना करनी होती है)

(१) निराण्य इच्छेला गर्ग आनिष्य, मी से बायइ भेरे कारा-दुल्यिमा गर्म भागित्य, कायइ में भेरे कार्युल्यमा गर्म भागित्य । भेरा य से निर्माण्या, गुर्व से बायइ गर्म भागित्य: भेरा य से मी विर्माणा एवं में भी कायइ गर्म भागित्य । जायमं भेरेंदिं सनिष्ट्रमार्ग गर्म भागेद्द. से मंत्रमा सेन् मा पहिल्ये वा । ते में साम्राम्या स्ट्राप् विर्मात, मांत्र में मेंसि बेर्ड् सेन् मा पहिल्ये था।

किसी सायवा के मन में कुछ, मायुमी की साय दिकर विचारी की दूपा हुई, ती उसे रूपविट अगवान से विचा पूछे ऐसा परना गाँ। मण्डता, सन्ते पूछ कर करना रूपाय है। रूपविट अगवान से विचा पूछे ऐसा परना गाँ। रूपविट अगवान से साथ देवर विचरण पर महला है, यदि है साथ में देवें तो ऐसा करना नहीं गुलाता। जो साथक स्पवित अगवान ने साम विचा साथुमी को माय दिवर जिल्हे दिन विचार, रूपने ही दिन या नो दूधानित माय दिवर जिल्हे दिन विचार, रूपने ही दिन या नो दूधानित माय दिन साम दिन साथुमी को माय दिवर जिल्हे दिन विचार साथित साम है। परन दूधानित माय दिन साथ साथित साथ है। परन दूधानित साथ साथित साथित साथित साथ साथित साथ साथित साथित साथ साथित साथ साथित साथ

२. मित्रमण-

the the appropriate the first with the time

प्रदेश रेशः स्वत्यात्रात्रां स्वत्यात्रात्राः स्ति । ।
प्रदेश रेशः स्वत्यात्रात्रां स्ति । ।
प्रदेश र्भाविष प्रदेश सहयात्राः प्रदेशे ।
रक्ताः दि स् नामः प्रदेशम् नाम् वस्मानगरित् ।
प्रदेशः वि गीप पत् देशम् नाम् वस्मानगरित् ।
प्रात्तास्य नद्भपं स्त्यक्कास्यम् वि ।

इय पोलरे घाणिवल में, पोणा को सातानता भी की जाती है भीर मिण्णाद्यक भी दिया जाता है। यह जिल्लीकी पोणी का होता है वे इस पालर है

मम्भानातरणा में, भगातमणा में, रोगातमणा में द्राण. धेत्र, काल एतं भाव की णापद् यारणा में, उत्पृहतापूर्वक सीझता से कार्य करने में, अनजान-पन में, कोई कार्य थाने वज के बाहिर हो जाने से उस समय जान, दर्शन, एतं चारित्र के मूलगुणरूप पाञ्च महायती तथा उत्तरगुण दश्च-विध प्रत्या-स्यान पाञ्च समिति श्रादि में जो श्रतिचार लगते हैं श्रथवा श्रतिचार-विषयक श्राशंका होती है तो उस श्रवस्था में यह तीसरा प्रायश्चित्त किया जाता है।

इसी प्रकार जो-जो दुश्चिन्तन किया हो, दुर्भाषा बोली हो, दुष्किया का हो तथा उपयोग लगाने पर भी जो देवसी आदि श्रतिचार स्मृति में न आरहे हों उन सब का 'तदुभय' प्रायश्चित्त होता है। व्यक्त प्रयोत् गीनामं द्वारा घषवाद-मापे में घानस्य करी, उपयोग रणते हुए भी क्षान, दर्भन एवं नास्ति में हेतु को गणरमान् विस्तपना होती है थी उचका 'बहुभय' प्रायद्वित हेला है।

४. विवेक-

पिन्होबहि, मैटाई महित्रं कहत्रीतिनीवहर्षेण् । पञ्चा नापमगुद्धं, सुद्धी विहिन्ना विविदन्ती ॥ मालाहदानाइच्हित्य-धनुनायसमिय-महित्यमस्टी छ । फारम-महित्य-स्टब्सियं सत्ताह्-विभिन्नं मुद्धी ॥

भीवर, बन्त साहि उपकर्ष एवं घटनादि, हात्रयोगी क इतान्यामी दारा उपयोगपुर्वेश कर्ण करते के पश्चाप धटकार हो कि यह मुद्देग पहुत सदीप के क्यूड है, हो विधिपूर्वेश उन्नारमा स्माम करता हो, बुद्धि है हो कि अबुदे प्राप्यित है।

पनी प्रकार प्रयोग प्रारंत के भी। वान्तु भवुषे प्रवर्त के नह नाने पन। साथै भागते नीने-पान्य-मादल के लगा पन लाने में गुंबे गिट्टार महिल ही बार सूर्योद्या के पूर्व गुण हाल के परणहाने मानु के सारण शत्र केने बहा तथा मांदे कि सभी मूर्योद्या महीं हैं मा मान्या कार ही भूजा है सी उस जरपुर्वी विभिन्न के स्थान माने में सीक्ष हैंता है है

होती है निवित्त, याचार्य मत्त्रप्रदारी निवित्त, वात्र्यप्रस्थ साध्य में निवित्त, धारणात साध्योत तथातांत है निवित्त, पुलिय चातु के सत्त्रप्र प्रश्ल कर की के काल्या और साध्यप्रस्ता के सर्थित वस्तु प्रत्य कर की महे हुई तो वह

E. 其中的海南部的海南山西市中山南西 新拉拉斯

इस प्रकार चार भेद होते हैं—(१) लगुमास , (२) गुला (३) लघुचीमासी, (४) गुल्चीमासी । इन चारों के कि तीन-तीन भेद किए गए हैं—

- (१) परवश-पने किसी म्लेच्छ श्रनायं राजा श्रादि त्य देवता के दवाव से सेवन किए गए उपयोग रहित दोपं के प्रायश्चित ।
- (२) स्वयं त्रातुरता से उपयोग सहित सेवन किए गए दोपों के प्रायश्चित ।
- (३) जान-वूभ कर मोहनीय-कर्म के उदय से मूर्छाभा^व पूर्वक सेवन किए गए दोपों के प्रायश्चित्त।

इन वारह प्रकार के तप-प्रायश्चित्तों के जघन्य, मध्यम श्रीर उत्कृष्ट तीन-तीन भेद कर देने पर कुल छत्तीस भेद बनते हैं।

इन छत्तीस प्रकार के 'तप' प्रायश्चित्तों में कीन-सा त्प ग्रीर कितना तप होता है यह प्राचीन श्राचार्य देवों की धारणा-नुसार नीचे के कोष्ठक में दिया जाता है—

उत्कृष्ट तप-प्रायश्चित्त छुः मास का होता है, श्रतः छुः मास के भो दो भेद गण्ना में श्राते हैं जैसे कि लघु-छमासी १६५ उपयास, गुरु-छमासी १८० उपवास।

- १. लघु-मास से भी छोटा तप-प्रायश्चित्त 'भिन्नमास' ग्राया है जो कि २५ उपवास का होता है।
- २. पंचिवहे ग्रायार-पकष्पे पएण्ते तंजहा—(१) मासिए उम्बाइए, (२) मासिए ग्रमुम्बाइए, (३) चडमासिए उम्बाइए, (४) चडमा-सिए ग्रमुम्बाइए, (५) ग्रारोवणा ॥

—टाणांग स्त्र प्रशिशा

いまなな かか	1000	marry treed the	Ser.	E. L.	And the states of the states	13.4	11,6412	माह्यात क्यांच्य मान्याच्य	A 1.2.2
新設をおか	14.142	, m	272	F. 7.1	257.11	ri.	hed.	स्ताम	art. L
\$	19	ر المثل المثل	, pt	, 3 gu 3		100	; ;	97 926	*
***	10. P.	をは をか	\$435. \$ is	<i>€2</i>	新年1年1年	47.4/2.74	57.14	HILLS:	STATE OF
	į.	1 gar	144	-		****	***	an and	\$16°
is in	1977 1977 1978	**	4	-	Tally Land	The sales	क्षत्र राज	2.1.1.2	Trilled :
,	. **	340	\$** 4!	34		344	÷-		~~~
alessa fra Banes	42.3	"我说:	Milhar.	11.11	e de la composition della comp	Trans	Œ	Æ	n- 4n,/1
4				the falls	\$er-	SET FART	社の社	11.00	
		~ *		\$\$ minus	1 mm). 11 mm	या गाम	and land	Parage La	applicated in
1 mm C 4 mm 1 mm 1	;	***************************************	4 A 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	÷	gse	39 3797 2 pm	· >-		- 49°
		,	£2:13.4	Ţ	Æ	talts:	1	ALT.	Tribute .
f.	Je.		177 AV	E	E.J.		なない	मान्या म	田本社
10 to	S. August	2	12	1	4	April 8	English The	Section	Edigada
		,	がない		100	\$ C. C. S.	f.	100	Hite I
			**	- Lukyany		(1:4)	上	10 5 5	गुर ग्रीम
-		,,,		Tradique.	gar s		起報	3 THE TOTAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY	(466)

九、大致於於 衛 聖祖衛 海縣 海縣 聖職者 門前 衛 衛子 如此

सकान में गर्भना अम्हाना एवं अन्यवहून स्पीयहर स्नादि एकाम्याद-वाल में स्थापनाय करने, करवाने एवं अपने बादे वे बन्दा गमनने ने सम्बोमानी प्रायदिक्त धाना है।

 भ. ते निकार हैहिन्द्राई मर्गमानगर्द कारणन उपिन्याई समीम-नाई मान्द्र, वार्षेत्र का साहत्रकः, में भेषनाचे बाजाकः व्यवस्थानिये विकारान्त्रे कार्यक्षेत्रः — निर्द्राण पुर १६१९७१

समाद के कारत शिक्षों की शमनः न बहाने ने और क्रमाः र पद्दी पासी की अध्या मगनने के समुखीमानी प्राचीनक मना है।

 ५. त्रे क्लिम् गव-बंध्येराई कवागृतः वत्रविक्तुरं वागृहः वार्त्तः वा राष्ट्रावदः, तं सेनवाके काकाल्य काव्यव्यक्तियं पश्चित्रहानं वाग्रहमं ।
—शिर्णाय या १९४१०३

सामाराष्ट्र सुप पहान् विवा तार्यात समयायांत साहि णाम पदानं, पडाने साहि वह स्टाहा स्वयमं हे सन्तरीयासी सामन्यित साला है।

व. से किश्य पावर्ष सामृत्, मार्गुर्त का मार्गुरास्त् में किश्म बागुर्य कार्या कार्या कार्या का का कार्या का कार्य का कार्या का कार्य का कार्या का कार्य का का

संबद्धाः क्षात्रः के जात्रा ब्राडित के क्षात्रित्रं श्रीवा श्रात्तात् क्षात्रं श्रादमः व की ब्राह्मतः श्रीवः व्यव की व व्यवताः क्षीत् । कुठे सम्बद्धाः स्थापनः वर्तते द्वी स्वकृतिहास्ति व्यवश्चित्रः श्रापतः है ।

के कि समार्थि काराव्यीत मार्थ प्रमाणक ने अनुकालक विस्तित्व वितास स्थापित के कार्याव्या समार्थित समार्थित समार्थित स्थापित स्थापित समार्थित स्थापित स्थापित समार्थित स्थाप

mm 智明 日本 安治により、

साद के कारण गोज विधे विका प्रयत्ता रागईष के गरी-हेकर, सम्-प्रायदिवास को गुरु-प्रायक्तिको कोर पुरु प्राय-हे को कप्-प्रायदिवास कहते वाले भीर इने घन्या समस्ते सापन को गुरुवीमाली प्रायदिवास थाला है।

 के किस्त् श्राप्तकेयाणाम् वर्णस्येष्ट्, यर्थास्येतं का साक्ष्यकः, स्यू वर्णसम्बद्धाः, स वर्णस्येष्ट्, स वर्णस्योतं का साक्ष्यकः, सं से श्राप्ताकः व्याक्षस्यितं क्षीत्रपद्धानं क्षण्यास्यं ।

प्रमाद के नाक्य भ्यवा स्मामिनिर्धात्त राज्यात के कारण (मान्ताम में पर्वृत्य करता भीर पर्वृत्यान्तात में सर्वृत्या रोत भीर इने भनात समझते के गुरुतीमारी प्रामित्य । है।

की भारत कानशिक पूज्य कुरति की कीई मामाश्यास के उस में सामाध्या करते कारेंद्र की भावता समाध्यात है की एक के मूंद्र मुक्तासमाई कह भारतिका समस्य है ।

भा के क्रिक्ट दिशाकीयराज्य भावतार्थ क्याद, सर्वत का साहरापुः, जन्तु द्वाद वीपायका कार्या चारत, अर्थते का वायुवाद, भी वीपाली समुक्तापरक्षातिको पहित्रापुणने कामुन्यादुर्थ ।

mysaged the Atlantage

हिर्देशिक्सर्वीक साथ कार्याद कार्योच के निवादकारिकार क्षेत्र सुप्रहू

4. ते निरम् मृत्तिस्य-पुलेय क्षमां या, यामं या, माहमं या तहमं या पहिमालंद, पित्मारंतं या साहमदा, वे निरम् मृत्तिस्य-पुलेस् मा या, पित्मारंतं या साहमदा, वे निरम् मृत्तिस्य-पुलेस् मा या, पदिमारं या, प्रवस्तं ता, पापपुण्यस्य या पदिमालंद, पदिमारंतं साहमदा, वे निरम् मृत्तिद्वयुक्तेस् वर्णादे पदिमारंतं वा तहमदा, ते सेयमारो सावसद सहस्मानियं पविद्याहार्यं सावस्तं ।

—स्तिराय गृहा १९१२७,२८,२४०

मृतंत्र्यतीय कुलों से माहार पानी, यन्त्र पान, तथा यनति-गमा देनट जिन-सामन को धवहँखना में निमित्त दनने याने एवं इसे मन्द्रा समभने याने सामक को लघुनीमानी प्रायश्चित गमा है।।

१०० में निवाद परिवाद शालाने कार्या च्युतं प्रधानियातं धरेद, घरेते
 ११ स्थादान्य, से रेजवाको ज्ञानाल्यू नाह्यमानियं परिवादको तस्पाहते ।
 —िर्दाण सूत्र ३ पाटका

ारी सामक गुरे-पुरे करियार, य सम्में मोन्य मात्री की कार त्या रित-सामक की कार्यक्रमा वासका है कीर इसे कार्यक्र समामणा है तो अने सम्पर्धमानी साम्बन्धन काला है।

भरे बारमण, दिवारि भी साहर भी है, कर प्रमुख करते उन्होंने सह वसकी दिवार के कुम्बुसुक्त जो साह कुम्न सम्बद्ध के रिवार के सह विरोधिकातार की दिवारि की दिवारिक सह दिवारिक समूद्ध की स्वार के स्वर्ध के दे विरोध सहित की दिवारिक सुद्ध की स्वर्ध की स्वर्य की स्वर्ध इत्यादि श्रनेकों प्रकार के दर्शनाचार-विषयक दोपों के प्रायश्चित्त समभ लेने चाहियें।

श्रव चारित्राचार के प्रायश्चित्तों का वर्णन किया जाता है।

विषय, कषाय, निद्रा, मद श्रीर विकथा रूप प्रमाद के वशीभूत होकर चारित्राचार में जो दोप लगते हैं उनके दो भेद होते हैं, मूलगुण के दोप श्रीर उत्तरगुण के दोप। श्रीहसा, सत्य, श्रस्तेय, ब्रह्मचर्य, श्रपरिग्रह विषयक तथा रात्रि-भोजन तथा विषयक दोपों को मूलगुणों के दोप कहा जाता है श्रीर पाश्व समिति, तीन गुप्ति, श्राहार, विहार, एवं दशविष् प्रत्याख्यान विषयक दोपों को उत्तरगुणों के दोप कह जाता है। इन सब दोपों के प्रायिश्वत्तों का वर्णन क्रमशः इस प्रकार है—

मूलगुणों के प्रायश्चित--

 जे भिक्लू माउग्गामं मेहुण्-चिडयाण् विक्षवेद्द, विक्षवंतं चा साइज्जद्द, तं सेवमार्थे श्रावज्जद्द चाउम्मासियं परिहारद्वाणं श्रणुग्धाद्दयं ।

--- निर्गीय सूत्र ६।१॥

जो साधक किसी स्त्री को मैथुन भाव से कोई वचन कहता है श्रीर इस प्रकार के वचन कहने वाले के श्रशुभ विचारों में रस लेता है तो उसे गुरु-चौमासी प्रायश्चित्त श्राता है।

२. जे भिषय् माउग्गामस्स मेहुण-बडियाए सेहं लिहद्द, सेह लेहाबेद्द; सेह-बटियाए बहियाए गर्दह्द, गर्द्धंनं वा साइज्जड्ड, तं सेवमारो श्रावज्जड् चाउम्मानियं पिहारहागं श्रणुम्बाइयं । —निशीय सूत्र ६१९३॥ जी गायक विभी सभी की सैपून भाग से कोई यह विस्ता इ. प्रमान इसके से जिस्ताना है और निर्मान के जिस्तानी है गुराना स्थान में गाला एक ऐसा अपने याने के विज्ञानों से एम निर्मा है में उसे मुक्तीमानी प्राथम्बर प्राप्ता है।

 से निरम् बाउनासम्ब मेंतृग्द-विवास करते तुसल, कलई ह्या, कल्या-विवास सम्बद्ध, मन्द्रित का स्वहरूपा, से सेपमानी सापालह स्वस्मानियं विवासहार्यो असुरवाहम । — निर्माण सूत्र ६१६६०

ती मापक माना के महा इतिहाँ। वाली विकी मधी में देम्स में भाव से किसी के साथ करेटा करना है, बनेशकारी तथन भेरता है, बनेश करने के लिए धनी को शोह वर्गहर पमय करता है और ऐसा करने याति के विनाशों में दस लिए हैं तो उसे मुक्त-बोमामों का प्रायम्बन प्रायद है।

प्र. ते शिक्त् बादमसाबाक भैतून-विद्याम करवाई पामद बहेद, यहँके का काद्यावदः के शिक्त्य बादमसाबाक्य भैतून-व्यविद्याम् भीन कार्यु समाई प्रदेश, ध्यंते का बाद्यावदः, ते शिक्सामी काद्यावद्य करवामित्रं गरिक्यदर्भि कानुस्थाद्यः । ——विद्यावद्याव्यः ११२०,३६०

न्ते सरपत मानुनारम प्रतिक्षे प्राप्ति विक्षे वर्षे के राज्य मेपून के आप ने बारएत काँक्शन तथा कीनारम गण्डे कार्य को मानम नावता है एवं ऐसा कार्य अले के विकास में के कार देता है से प्रति गुरू-कीमानी कर प्रशासिक्त देखा है। है क

क्षेत्र कारक्ष्य कार्युश्वरकार्यः वैत्यदि वर्षेत्रे हे श्रीतृत्व के आग्न वर्षः जाए कार्यके स्वति वर्षायः, वर्ष्यु कर्ष्यकारः रोग्यु कपणे सहिए कोर् कार्यात वर्ष्याने, संदे द्वार्य सुद्धानीकार्योत कार्यास्थ्यम् कार्यात्रे हे र १. ने शिक्त कारणायाय केन्स्तिन्तर सोरं ता, तृत्तिता, वार्ति ता, गुले ता, सम्बोत्ता, सर्वारं ता, कर्मान्तर्थे ता स्वत्यां ता स्वीर्थं वार्ति सालाग्रेह, सालाग्रेसं ता माह्यत्वह, सं शेवनासे सालाव नाडमार्थिं प्रतिस्थानी नाम्याहर्षे ।

जो सामक चमनी माना के समान किसी रती के गाँव भैगुन करने के भाग से दूग, दही, मागन, गुए, साण्ड, शक्त, मिश्री एवं चन्य कोई प्रणीत चाहार करता है, एवं ऐसा कर्ष वाले के विचारों में रस जेता है तो उसे गुरुनीमासी का प्राय-श्चित्त स्राता है।

७. जे भिरात् माउग्गामस्स मेतुग्-पटियात् रोड्चां श्राउद्दर् रोड्च श्राउद्देतं वा साइजाइ, तं सेवमाले श्रायज्ञाङ् चाउम्मासियं परिहारहा ——निशीय सूत्र ७।७१ श्राणुग्वाह्यं ।

जो साधक किसी स्त्री के साथ मैथुन के भाव से शरीर व चिकित्सा स्वयं करता है श्रीरों से करवाता है श्रीर करते हुँ? को श्रच्छा समभता है तो उसे गुरुचीमासी प्रायश्चित श्राता है

८. जे भिनस् माउग्गामस्स मेहुण्-पिडयाण् मणुबाई पोग्गल उविकरह, उविकरंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे श्रावज्जह चाउम्मारि परिहारहाणं श्रणुग्घाइयं। — निशीय सूत्र ७।८

जो साधक मैथुन भाव से सुगन्वित पुद्गलों को, शरीर विस्त्र पर स्रथवा स्थानक में विखेरता है एवं इसे स्रच्छा समभः... है तो उसे गुरुचीमासी प्रायश्चित्त स्राता है।

 ह. जे भित्रस्तु माउग्गामस्स मेहुण्-पिडयाण् श्रस्त्यं वा पार्णं वा खाइमें वा साइमें वा देइ, देंतं वा साइजइ; पिडस्क्रिइ, पिडस्क्रंतं वा साइजइ, ते सेवमाणे श्रावजइ चाउम्मासियं पिरहारद्वाणं श्रणुम्वाइयं।

—निशीथ सूत्र ७|८५,८६॥

को सामक मैयुन भाव से किसी की घालूर पानी देता है, देनवाता है और देने याने के घातूम विनारों में रख नेता है, इसी स्कार मैथुन भाव से घालूर पानी मनव कहन करना है भीर हमें घनता समझता है को छने गुरुवीमासी कर अव्यक्तियां जाता है।

१६. ते निक्ष् मारमामस्य मेटुरा-परिवाद कर्य वा परिवार का स्वारं का स्वारं का स्वारं का स्वारं का सावप्रवाद का हैंद्र, दिनेका काइल्टा, परिवाद, परिवाद का माइल्टा, के सेवमारी बाल्क्ट काइमारीस्थं परिवाहसं च्यानकाइ के ।

—किलीयस्य वारक्रस्टी

को सामण मैनून भाव में विसी की बहुड, वाक, सम्बद्ध, पारमीतन देता है, दिववासा है और इसे घटता समम्बद्ध है, इसी प्रकार मैनून भाव में स्वयं बहुड करका है सभा इसे घटता समस्त्रा है की छोर पुरुषोस्तर्भा का प्रागदिवस स्वयं है।

५६. वे विकाद बारम्यासम्बद्ध केतुम्प्रतियात् वाप्तृ, वर्णते वा गाहास्य प्रीतन्त्र , प्रीवस्त्री वा गाप्त्रणप्त, वे विषयात्री वाप्यस्त्र व्यावसानियो प्रीतस्थात्रां चाप्त्रायापूर्यः । —िर्मात्रां श्रुषः १९८४,४ शाः

भी मार्थ निभी रूपी से पैसा के भाव से उसे पराय है प्रमान ज़ाने पद्या है चीह तुमा बहने चार्च के दिवारों से स्वार्ड्यून प्रमान है की उसे मुख्यीयानी का आयोग्यन्थ भावा है।

े इ.स. में विकास काम्यानामास्य होकूना-करियान कामप्रेशन करिएवरी अगरानि करिया, कर्मन स्थान काम्यान में हिल्लामी नाम्यान काम्यानी करियानी काम्यानी करिया, कर्मन स्थानिकारी के क्षान्यानी क्षान्यानी करियानी

रेर काल के कहा है। होता के स्थापन होना होना है कहा के पात है। होनाक कहान है जिही कालि के स्थापन करता में स्थापन के स्थापन जाकों को सन्दर्भ सम्भवा है तो। यो मुख्वीमामी का पापरिं^ते साजा है।

13. निमालिं च में मिनायमानिं मापा पा भविकी वा प्राप्त पिनायम्या, में च निमांचे बाह्यनेचा, मेह्मपतियेवणपने गार्टिं चाउम्मानियं पिनायहाणं चप्प्रपाह्यं । — ज्हाकल सूर्व श्राप्त ।

कारण पड़ने पर कोई साधु किसी साम्नी की कृष्णानस्य में सेवा करता हुया उसे माता नहिन न पुत्री समक कर कर रहा है, परन्तु इस बीच उसका मन विकृत हो जाए अर्थात् मैथुन के भाव आ जाएँ तो उसे गुरुचीमासी का प्रायश्चित आता है।

१४. निग्गंथं च गाँ गिलायमागाँ पिया वा भाया वा पुत्ते वा पिलस्सग्जा, तं च निग्गंथी साहरजेजा, मेहुग्रापिडसेवरापचाा ब्रावजा चाउम्मासियं परिहारद्वाणं ब्रायुग्धाह्यं । —नृहहरकरप सूत्र ४।१०।

किसी कारण के आ पड़ने पर कोई साघ्वी किसी साधु की रुग्णावस्था में सेवा कर रही है और अपने मन में पिता भाई व पुत्र की भावना लिये हुए है परन्तु बीच में यदि उसके मन में मैथुन के भाव आ जाएँ तो उसे गुरुचीमासी का प्रायश्चित्त आता है।

१५. निग्गंथीए य राश्री वा वियाले वा उचारं वा पासवणं व विगिन्वमाणीए वा विसोहेमाणीए वा श्रवयरे पसुजाईए वा पिक्खजाईए वा श्रवयर-इन्दियजाए तं परामुसेजा, तं च निग्गंथी साइज्जेजा, हत्थक्तम-पिड-सेवणपत्ता श्रावजाइ चाउम्मासियं परिहारहाणं श्रणुग्याइयं।

—बृहत्कल्प सूत्र पा१३॥

कोई साघ्वी, सायं अथवा रात्रि में उच्चार-प्रश्नवण करने गई, किसी जीव-जन्तु अथवा काष्ठ आदि का उसके शरीरा- यत-विधिय से स्पर्ध हो लागे पर यदि वेद-सोह उदय हो लाए या इस स्पर्ध की सोर इन्द्रा करें, फोट तस्त-तमें के साव 1 जाएँ तो उसे मुख्योमानी का प्रायम्बित काला है।

३६, विभिन्नेतृ य शही या दिशाने या दशार्थ का पामप्रत्री दर विभागमान्त्र का विकेट्सारोत् का कार्यारे प्रमुख्येत् का परित्रकार्यक् कार्यास स्मानिक भोगादेखा, से का निर्माणी साहरतेला, मेतृस्पर्वितेष्यायला व्यवह भारत्सानिय परिद्रावहाले सालुगायुर्थे ।

- Single Hill 1018 All

नीई मार्ची साम धनमा राजि ने समय उपश्च मस्तरण तने गई, निमी जीत-उन्ह धमना नाष्ट्र धादि का मीतिस्मात दिनमें ही जाने पर माँद नेद-मोत् प्रमाही जाए एमा ऐते यो तो घीर इच्छा सभी रहें, बीर इस मार्च्य ने मन में रूप में मैंपन से भाव था जाएँ ती उने मूर्चीमार्थी ना मार-प्रमा धारा है।

- कृत, से विवास बास्त्रावें की है, करने का बार्स्ड है से विवास वेगायाओं की का वा का वार्स्ड है। विवास के स्वारंड है कि साम की साम
- देश, देवे व द्रीन्त्रका हैंद्रव्याक्षण हैंकान्य व्यविकाली क्षा व व्यविकाली विद्यादीकार, श्रीकृतावीकानुकाली क्षावानुक कार्यकारीलय व्यविकाला

रिद्वाराण्यं १ हैते च प्रियम तिर्धातमा विकास स्थिति स्थिति स्थिति स्थानित स्थिति स्थानित स्थानित स्थिति स्थानित स्थान

१६. जे न्निग् लहुसमं फरुतं नगइ, नगंतं सा साइजइ, तं सेवमारी
 सावजइ मासिगं परिहारद्वागं उक्ताइगं । — निशीय सूत्र २११८॥

जो साधक जरा सी भी वाचिनक हिंसा स्वयं करता है दूसरे से करवाता है भीर करने वाले को अच्छा समभता है तो उसे लघुमास का प्रायश्चित्त आता है।

२०. जे भिरत् लहुसमं मुसं वयद्, वयंतं वा साद्वाह्, तं सेवमार्षे 'श्रावज्ञह् मासियं परिहारद्वागं उग्वाद्यं। — निर्शाय सूत्र २।१६॥

जो साघक थोड़ा सा भी मृपावाद स्वयं वोलता है दूसरे से बुलवाता है और इसे अच्छा समभता है तो उसे लघुमास का आयिवत आता है।

२१. जे भिक्त् लहुसर्ग श्रदत्तं श्राइयह, श्राइयंते वा साइजइ, तं सेवमार्यो श्रावज्ञइ मासियं परिहारटाणं उग्धाइयं।

— निर्शाय सूत्र २।२०॥ जो साधक सूक्ष्म चोरी—विना श्राज्ञा किसी की वस्तु ग्रहण करता है, करवाता है श्रीर ग्रहण करने वाले को ग्रच्छा समक्ता है तो उसे लघुमास का प्रायश्चित्त श्राता है।

२२. नो कप्पड् निग्गंथाण वा निगान्थीण वा वेरज-विरुद्ध-रजांसि सज्जं

े कारते बारामानी कारणे कावारातारामाने स्केट करेल का कार्यकार, के लूटको इंद्रशासी कार्यकर साध्यानीत्वा स्थितिकार्यक स्थितिकार्य साम्यानकार्य ।

वहीं मोर्ट पान्य-पानस्था न हो (धनारक्षा स्तान्य हो) त्रा संभ्य में पृष्ठन्त्र अन रहा हो, कि देशों के लोगे जिल्ली अधिकारी म तीने व माधु वाली की गत छाता-लाला मही प्रकार स्थित मोटे सम्बद्धाः हो देशों से प्रथम लाग है स्ति की सकता महरूती है हैं। यह सार तह सह सार कार महरूताहें। क्षीती पत्ती के क्षीपी जा नेपण एकता है कीए की एक जी जाती

48. Every a market factor and alter alternative and an experience of the first of t गा प्रायदिवस बाता है। हिलाही बारको का बार्क का स्टाइन का कार्य का वाहिलाहरूमा बाल्याया. Affilies and saids mergene mendent effet dengent in' by ma भूति कं स परितित्व के स्व प्रतिनातीं के विकास सामित of the state of th The traction

alled my details hered to be the ten december of the sale Particular annually 1 and the second section in the same of the second, suffer the मुक्ता मामते हैं, की स्वतित्व है क्षणमा स्वतित है कर्त स्वति करते हैंबार साराजा सेने सार्थ के लेका है। तम सार्थ सांद में Married of the state of the sta The state of the s मापन कामन्यति को माल व मात्तम नशिवना मही उसे राजि-भोजन का तोर लोग नथे त्रमा। यदि तह महि उस पाहार को करता है याचा विसो मन्य को देश है सो उसे ग्र-नोमासी का पापरिनस पाता है।

२५. भिन्न व तम्मव-विजीए चन्नामित संक्षे संश्राहित विदेखान्त स्वाहित व्यवस्थान स्वाहित स्वाहित

— वृह्यकत्प सूत्र पाणा

भिक्षु का संकल्प है कि मूर्योदय से पूर्व तथा सूर्याहत के परचात् वह आहार न करेगा। साधक, शरीर से कष्ट सहत करने में समर्थ है परन्तु घूल ग्रादि से व मेघाच्छन्न ग्राकाश होने के कारण उसके मन में तिद्वपयक सन्देह है, किसी ग्रन्य से पूछा, उसके कहने पर विश्वास करके ग्राहार ग्रहण कर लिया ग्रीर उसे करने लगे, तब उस समय साधक को मेघ ग्रादि के हट जाने से ज्ञात हुग्रा कि ग्रभी तो सूर्योदय नहीं हुग्रा ग्रथवा सूर्य ग्रस्त हो चुका है। उस समय यदि वह साधक मुख में डाला ग्राहार वाहिर निकाल दे, हाथ में लिया हुग्रा छोड़ दे ग्रीर पात्र में पड़ा परठ दे, तो उस साधक को रात्रिभोजन का कोई दोप नहीं लगता। किन्तु यदि वह साधक उस समय ग्राहार करता जाता है (कि दोष तो लग ही चुका, ग्राहार कर हो लें) ग्रथवा दूसरे किसी महाव्रती को देवे तो उसे गुरु-चौमासी का प्रायश्चित्त ग्राता है।

२५. भिक्त् य उग्गयिक्तीए श्रग्त्थिमयसंकप्पे श्रसंथडिए निव्विद्गिच्छे श्रसग् वा ४ पडिग्गाहेत्ता श्राहारमाहारेमाणे श्रह पच्छा क्रेमोर्टेस - ब्रायुमाए स्किन् बर्मासिन् वा, से र्ट व सुर्वे, रंज व विस्तिर, रूप र्याची, में निवित्तमणी विकेतियाँ। माद्यस्यादः में प्राप्ता श्रीत्यारी कालेवि का कामुम्बद्देवाली काकारण कालकारिक विवेशकारण कालुन्य पूर्व श - पुरावताच सूच परिक्री

मूर्गोदय के परचात् एव दूसरेन के दूर्व बाहार एउने जी प्रतिका वाला नामक, रोग के नारण धनवा मार्ग धलते न मेवा गारने सादि में भारीर में सममये हैं परन्तु सहार सेने समय सूर्वीदय एवं सूर्योस्त विषयक सने ने संदेश मही। पालुक विकास सो कार्ने समे। पालुक एकी समय सन में विस्पय हुआ कि मूर्वोदय नहीं हुआ सप्ता मूर्कोगर हैं। धुना ्रि उस समय गाकास याँद यह सामन मूंह में दाएक छातून धोहिर निकास है। हाम का महाहर छोड़ है और पात की स्मामूबंब परिकारम करदे से क्षेत्र सोत्सी दम का पोर्ड दौष नहीं नगल, जने पोर्ट प्रायम्बन नहीं पाला निन्तु सन में सूर्वीदेश कृति मुखाँरस विषयक विषय होती पर भी विदि यह माध्य (दोने से त्या है गमा, मानार बच्छा नहीं सोटा क्षान् भ्रमादि दिल्लाहे के है साहत राज्य सान् ध्रमाद बाद ने कारहोश्र स् समने किसी पुनित संस्था गोर्येत ली हो। सुन सीमार्गी er multan um d'u

१६, विस्तु व अवस्थिति सम्पर्णान्यक्षिणे समावित्र विस्त हैस्य पुरश्का क्या विकास का स्था करियामाने मा काल्या कार्य है कार्य कार्य कार्य المعادية المناسبة الم المريدية أن والإوامة مسال والدار الدامية المسال المسالية الدامية المسالية ا the think of their sending to some sources on the winds with the source of

२७. इट पान् निमान्य वा निमंत्रीत् या सक्षेत्रा सिंगार्वे गैरि श्वाले सभीयणे उपमाने आमान्देश्वा, सं विभित्तमाणे विशोहेमाणे शाह्यकम्यः सं उपमित्रिमा पण्योगितमाणे सहभीयणपरियेगणपते आगण्यह शाउममित्रे परितारहाणे अणुग्याहरे॥ —युहत्यक्य सूत्र ५१३०॥

किसी सायक को मूर्यास्त के पश्चीत् उग्गाल माजाए तो यह बाहिर थूक दे तो कोई प्रायश्चित नहीं म्राता किन्तु यदि यह म्रन्दर ही निग्गल जाए तो उसे रात्रिभोजन का दोष लगता है श्रीर उसे गुरुचीमासी का प्रायश्चित म्राता है।।

२८. तण्णं ते बहुवे शिमांथा य शिमांथीश्रो य समग्रहस भगवश्रो महाबीरस्स श्रंतिण पृथमट्ठं सोच्चा शिसम्म, समग्रं भगवं महाबीरं वंदर् नर्मसद्द २ तस्स ठाण्स्स श्रालोयंति पदिश्वमंति जाव श्रहारिहं पायन्छितं तवोकमं पदिवज्जंति ॥ —दशाश्रतस्कन्य सूत्र २०१५६॥ तय बहुत में साथु साववी, श्रमण भगवान् नहावीर स्थामी मुनार्यन्य मे नियानी का हुमल गुन कर चयकीत हुए, वान् को बन्दना नमस्कार की छोट राजा श्रीपक छोट लगा रानी को देश कर हो नियम निया था उमही याली-या निष्टना की घीर प्रतिक्रमण किया, सावत् उमका क्षेत्रिक त्यित्वत सप्तमं घत्तीकार हिया ॥

इस प्रकार विशिष्ट विषय, कृत्यम, विद्या, विक्या चीर गर रूप प्रमाद्ध के कारण मृत्याणीयकार व्यक्तियाकार के द्रीदी हैं। आयोग्यत् गमक रेने चाहिमें सोर पारण प्रमार में शिलिए प्रमाद के भारण उत्पर्युगसम्बन्धी साजियानार हे प्रायोग्धरी , शा गरंग दम प्रकार है—

े है जिसिक्त मिनिन विदे में लेंद में ता माणुक्त में किनातने बाधनह . Proplic agreending America a

जी माराम प्रमाणी भन भन प्रतिदिन एक ही पर से माराम लेख है, संग्रमात है सीन साथ गर्भ की संस्था गर्भाण है सी को नक्षण का प्राथमित प्राथ है।।

A SE Expense facine with weath we strawns, it is now the that they seeked in security of

की सहस्रक महास्थान व स्थानिताम मार्थ हैराए हैंसी पन making of the standing being and by and the standing of the st Married Married States of the the control of the same and the same and the control of the same is the

[·] 智慧 等學 新教教 學等 医一种 医闭门 对 一个大大学 安持 放性 李 李 李 一

११. जे भित्तत् परं चीभावेड, चीभावंतं वा साङ्काउ; जे भि विकाबेड्, विकाबंत या साइज्जड्, तं सेनमामे पात्रजड्, नाङ परिहारहाम् ऋणुम्बाइयं ॥

जो साघक दूसरों को भय दिलाता है एवं उन्हें विस्म डालता है श्रीर इसे श्रच्छा समभता है तो उसे गुरुचीमासी प्रायश्चित्त स्राता है ॥

१२. जे भिक्त गिहि-मत्ते भुंजह, भुंजंतं वा साहज्जह, तं सेव श्रावज्जह् चाउम्मासियं परिहारद्वागां उग्वाह्यं॥ — निशीय सूत्र १२।

जो साधक गृहस्थ के पात्र में श्राहार करता है श्रीर क वाले को श्रच्छा समभता है तो उसे लघुचीमासी का प्रायश्चि श्राता है॥

१३. जे भिक्त् श्रप्नउत्थिपुरा वा गारिथप्रा वा उविह वहावेड वहावंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे श्रावज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वागं उग्वाइपं

जो साधक अन्यतीर्थी तथा गृहस्य को अपना सामान उठवाता है और उठवाने वालों को ग्रच्छा समभता है तो उसे लघुचौमासी का प्रायश्चित आता है।।

१४. जे भिनल् महानईस्रो उहिंद्वास्रो गिण्यास्रो विजयास्रो स्रंती मासस्स दुवखुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरह वा संतरह वा, उत्तरंतं वा संतरंतं वा साइजाइ, तं जहा-गंगा, जउगा, सरऊ, प्रावई, मही; तं सेवमाणे थावज्ञइ चाउम्मासियं परिहारद्वार्गं उग्वाइयं ॥

जो साधक एक मास के अन्दर दो वार वड़ी नदियों में — निराीथ सूत्र १२।४१॥ उतरे एवं उन्हें पार करे और ऐसा करने वाले को अच्छा समभे तो उसे लघुचौमासी का प्रायश्चित्त श्राता है।।

१५. हे शिक्ष बहुत ब्रायाम हेल्ड. हेहन या ब्राह्म्य स्थापन माला बारमासित ब्हार्क्टल उत्पादक ॥ —हिम्संना सूत्र ११ १ ।।। की साधन भीते में ब्रानी मृत त्याना है क्षेत्र होते संस्था जनता है सो उसे मण्योगानं की क्रायोग्यन दाना है।

ित मेतर, भूजें या ब्राइजर, न संच्याले कार्यक वार्यक प्राट्ट - Carrier Ed. 13135, 219

क्षी सामक विका सिमा कर वया सन्य हताल र कार्यार वाल त्ता है और ग्रहन करते यांच को प्रत्य सम्मान ने ती उसे हाराष्ट्रमे ॥

ع. يُم المعمور الموسوم والوسال وروينام والمو عاد ورويار ال तमुनीसामी का प्रायोध्यम बाला है।।

The state of the state of विकारो कामगढ् कार्यमानिकं द्विताहरू राजकः ॥

की स्वतिक स्वति वाली की इस श्वरत स्वतिक है स्वति है।

THE REAL PROPERTY AND ASSESSED ASSESSED TO THE PROPERTY ASSESSED.

3. H. frank Richard and M. Confirmates and Mily spread and the spread of का यायस्थित होता है।। the time and the second frience of a factor was a

the state of the s AND STATES AND THE STATES OF THE PERSON AND ST The same of the sa The state of the s

Showing the while the day of the short of the

---- निशीभ अन अन्तर्भ ३,१४॥

जो सामक अन्यतीयिक अथवा मृहस्य से अपने पाँव साफ करवाता है तथा उन से दवनाता है और ऐसा करवाने वाले अन्य साधकों को अञ्छा समभता है तो उसे लघुनीमासी का प्रायश्चित्त श्राता है।।

२१. जे भिनम् श्रान्जिधिण्या या गारियण्या वा श्रन्थणो कार्यसि गंधं या श्ररहमं वा श्रितमं वा भगंदलं वा श्रन्तयरेगां तिम्तेयों सरधजाएगां श्रानियुन्दिज वा विन्छिदेज वा, श्रानियुद्धिता विन्छिदित्ता पूर्य वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसिद्धेज वा, नीहरिता विन्नोहेत्ता साश्रोदम-वियटेण वा उसिणोदम-वियटेण वा उन्छोलेज्ज वा पघोण्ज वा, उन्छोलिता पघोहता श्रन्नयरेगां श्रालेवण-जाएगां श्रालिपेज्ज वा विलिपेज्ज वा श्रालिपिता विलिपिता तेव्लिण वा, घण्ण वा, वसाण् वा, नवणीप्ण वा, श्रव्भट्टगेज्ज वा मक्येज्ज वा, श्रव्भित्ता मिल्ला श्रन्नयरेगा धृवण-जाएगां धृवेज्ज वा पध्येज्ज वा, एवं करंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे श्रावज्जइ चाउम्मासियं परिहारहाणं जन्माइयं॥

—निशीथ सूत्र १५१३६॥

हो गापक, श्रन्मतीचिक श्रवया गृह्य में प्रकृत घटीर में ज गृम्बह्, भेद, पुत्री, मन्सा=ह्में, जगहर, (मीमिया-दिन्हें) हे की किसी तीक्षण करन में एक बाद छेवाने समया रानार छेत्रावे, एक चार अभवा चारण्यार रिप्रका कर उन । पीप रक्तादि निकल्पा कर विशुद्ध करावे, विशुद्ध करावर णित प्रथम प्रतिता तत हारा एक गार पुत्रमाण प्रथम त्रियार मृत्यात, फिर मल्लम लगवाए, मार्ग्यार स्टायाए, ज्यी हुआ में श्रम्महुन महेन करनाए, चीर हमें एक गार एत दिल्लाम् समया नारम्बार मूल दिल्लाए, इस प्रवार हो। कीई सामन करपाता है और उमें घन्या समभा है ती जी मपुर्वोगामी का प्रायमित साता है।।

२२. से दिलापू जायामान्याचे का निर्मेष्यान्याचे का प्राकृतिक वार्मान्या कार्यक्रिय परिवार्यिय, परिवार्यमें का सामगढ है सेन्यानी का मार्थि चाराभागियं परिवाहमाँ बालाइनं । के प्र को धानां काराने काराने े में कहा - विकारियंपणिया, मार्गिया, ब्यापणिया, मार्ग पूर्विय हा and the second second

की माध्य समये की सहस्या के समय सम्बद्ध पर की है। रम्पा के भाग की विका जाने जिला होंगे उसा मोज कि तहीं हैं। The state of significant states and the significant states of the states · 新山山山 水水土 北京 北京中央 大山山山 東北京山村 東北京山村 山山山 山山山 Treet and the second se All differently sales desired to their sales that the sale of the con-े अपन्यत्वा है और पान प्रमुखीयाओं प्रश्नितिक प्राप्त है से

考表 · 是 医细胞 电双射线 电 一种电影 如 电影响 电影响 电影响 电影响 The state of the s

जो साधक प्रमाद में पड़ा रह कर, आस-पास अन्यतीर्थी एवं गृहस्यों के आने-जाने के स्थान में आहार-पानी करता है और ऐसे स्थान पर ग्राहार-पानी करने वाले को ग्रच्छा समभता है तो उसे लघुचीमासी का प्रायश्चित्त आता है।।

२४. जे भिरात् श्रसणं वा पायं वा खाइमं वा साइमं वा उसिणुसिणं पडिगगाहेड्, पडिगगहंतं वा साइजङ्, तं सेवमागो श्रावजङ् चाउम्मासियं परिहारद्वार्णं उग्वाइयं ॥ —निशीय सूत्र १७।१३१॥

जो साधक, अत्युष्ण से भी अधिक गरमागरम आहार-पानी ग्रहण करता है, ग्रीर इसे श्रच्छा समभता है तो उसे लघुचीमासी का प्रायश्चित्त श्राता है।।

२५. जे भिक्त् सागास्यि-पिंडं गिरहह; गिरहंतं वा साइजह, तं सेवमार्गे श्रावजङ् मासियं परिहारद्वार्यं उग्बाङ्यं॥

—निशीथ सूत्र २।३६॥

जो सावक शय्यातर का आहार ग्रहण करता है अयवा ग्रहण करने को कहता है या इसे अच्छा समभता है तो उसे लघुमास का प्रायश्चित्त आता है।।

२६. नो कप्पड् निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारिय-पिंडं बहिया नीहडं श्रसंसट्टं संसट्टं करेत्तए । जे खलु निगांथे वा निगांथी वा सागारियपिंडं विहिया नीहर्ड श्रसंसर्ट्ट संसर्ट्ट करेंद्र करेंत्रं वा साइजइ, से दुहश्रो वीइक्कम-मार्गे श्रावज्ञङ् चाउम्मासियं परिहारद्वार्गं श्रणुग्वाङ्यं॥

—वृहत्कल्प सूत्र २।१८॥

शय्यातर के घर के ग्राहार में से वाहिर निकाला हुग्रा ग्रंश जो कि श्रभी तक दूसरे के श्रिवकार में नहीं हुआ ग्रीर उसके ग्राहार में नहीं मिला लिया गया, तो वह शय्यातर के श्राहार का श्रंश साधु-साघ्वी को ग्रहण करना नहीं कल्पता।

प्रापु-गार्थों उसे ग्रहण मार्ने के लिये उस ग्रंथ को पथ्य मारावे, श्रीर साधु-मार्ग्यों को देने ने निकित पथ्य मारावे, श्रीर साधु-मार्ग्यों को देने ने निकित पथ्य भारते याने को श्रद्धा नमके (साधु-मार्ग्यानिकश्य ने मणे श्राह्मर को ग्रहण गारे) तो यह तीर्थवर देव श्रीर कि शंगों की श्रामा का उत्तरहरू कृत्या है श्रीर उने श्रीमानी का प्रायक्तित श्राता है।।

३१, मी मण्यह विसंधाना या निर्माधीन था, श्रामी हा, पार्टी हा, पार्टी या ।
प्रिम का मार्टम या महमाण पीनसील पिलातिका पिलाई पीनिर्म प्राणितिका प्रतिकार भीतिका प्रशापित ।
कार्यीक प्राण्यादीका, एसी प्राण्यातील प्रतिकार प्रतिकार प्रशापित ।
कार्यीक प्राण्यादीका, एसी प्राण्यातील प्रतिकार प्रशापित ।
कार्यीक प्राण्यादीका, एसी प्राण्यातील प्रशापित का प्राण्यादीका प्रशापित ।
कार्यीक प्राण्यातील प्राण्यातील प्रशापित कार्याविक प्राण्यातील ।

प्राण्यातील परिस्ताहको सम्प्राण्या ।

नापन, प्रथम प्रमूद का निया हुआ बाहार मुख्ये कहार में महोत, यदि की जाए तो उसे महत्वय कहार कोर महिन्छी पाण गायक को सामें के नियं देवे अधिक हालका प्राप्त हमान को देव का गाय कहते. यहनपूर्वक एक कार्यार को बाद की दिव के गायक उस माहार को क्यम कारा है कार्या अन्य की रेग है सी उमें समुनीमांनी प्रायदिक्त कारा है है

the state of the s

श्रवस्था की श्रशक्तता के कारण उसे तप प्रायश्चित न देकर छेद-प्रायश्चित दिया गया, ये बदल के प्रायश्चित हुए। किसी प्रायश्चित का बदल न होकर छेद प्रायश्चित उसे श्राता है जो विना कारण श्रपवाद-मार्ग का श्रासेवन करता है।।

उत्सर्ग-मार्ग श्रीर श्रपवाद-मार्ग का क्या वास्तविक स्वरूप है? श्रीर इस के किस प्रकार प्रायश्चित्त होते हैं? ये सब बातें इस प्रकार जाननी चाहियें—

उत्सर्ग का अर्थ है—'उत्सृज्य विशेष-प्रसङ्गान् यः सामान्य-नियमः स उत्सर्गः।' हीनतर तथा उच्चतर विशेषप्रसङ्गों को छोड़कर जो सामान्य विधि होती है उसे उत्सर्ग-मार्ग कहते हैं और जो असामान्य अवस्था में आचरण किया जाए उसे अपवाद-मार्ग कहते हैं।

उच्चतर विशेषप्रसङ्गों के ग्रपवाद-

- (१) वेश्या के सानिष्य में वास नहीं करना # यह उत्सर्ग-मार्ग है, किन्तु स्थूलभद्र जी महाराज ने वेश्या के घर चातुर्मास किया। उन की श्रात्मा विशेष वलवान थी इस लिये यह श्रपवाद-रूप था।
- (२) कोई साधक सहसा वारहवीं पडिमा घारण नहीं करता यह सामान्य नियम उत्सर्ग-विधि है परन्तु श्री गजसुकुमार जी महाराज ने दीक्षा लेते ही वारहवीं पडिमा का वाहन किया श्रीर श्रपने लक्ष्य की प्राप्ति की। उन में विशिष्ट श्रात्मशक्ति होने के कारण यह श्रपवाद-विधि थी।

ः सत्र प्राशह॥

न चरेज्ज वेष-षामंते, वंमचेरवसासुपः ।
 वंभयारिस्स दंतस्य, होज्जा तस्य विशेतिन्त्राः ॥

(३) वनायं शेष में विहार नहीं करना यह उत्सनं मानं ारा अगाम दात्र म । पहार गर्ध क्षेत्र में विहार किया भी सन्मुचित्रय साधन के लिये प्रनाय क्षेत्र में विहार किया भी

के हैं की कि अपनाद करने हैं।

(४) मही के तीर पर प्रामुक जल भी नहीं विया जाता: क्रींत करने पानी की श्राणंका का व्यवहार ही जाता है।

(४) जंगठ मागार की तीय उठनता में राजि को निस्ते (४) जंग्रह भागांव की तीय जनाता में साथ कारहे ही हो होते प्राप्त भागांव की तीय जनाता महासती साथक बारहे की साथ कारी में परन्तु महासती समय अपने घरीर की कार्य की प्राप्त से बाहिर जाते समय अपने शरीर की

्रालकर प्रमानी के अपवाद ?— 11 11 11

(१) नामन सचित जल मा संगठन नहीं करता यह ारा अथा सावत जल का सम्हल नहां अस्ता यह कार मार्ग ने होने पर पुटनों से नीने

हे राम हामावाद्य या जिल्लामा ता प्रतिवक्षणं आव स्त्रेताता-कि रेक्ट क्रिकेट्स अप क्रिकेट्स अप

क्षा कराव स्थाप स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप कर के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स कार द्वानस्था क्रांति कृत्यों की में मत्या हत्यों साह । हें सं यह - TEMP 101 5 14 5/1

- - Minter tum calfally Britigle II

ं भे क्या विदेशात्मा निर्माति या द्यानीति निर्देशा the section of the se करें हैं हैं है के कार के कार के भी भी हैं। मा कारा कार महिला के के महिला कार के के महिला कार के के महिला कार क्रियों की दुर्ज की क्षितिया या श्रीहरूस्ट्रें क्षेत्र की क्षेत्र की क्षेत्र या श्रीहरूस्ट्रें

AND SECURE 一大作品 在 初年日

The same of the sa A to be the substitution of the said and the substitution of the s

- (१) धनाये क्षेत्र में विहार नहीं करना यह उत्मर्ग-मार्ग १ परन्तु विभेष साधन के लिये धनाये क्षेत्र में विहार विचा भी बेटा है जो कि अपचाद-रूप है। १
- (४) नदी के सौर पर श्रापुक जय भी नहीं विया जाता; वर्षोंकि करूने वाली की ब्रासंका का स्ववतार ही जाता है।*
- (४) ज्येन्द्र सामाह को तीय उप्पना में शिव को गिर्छ नामी भीम भरम हो जाती है पछनु महावती काएक बारह ही महीने रात्रिको दाया में याहिए जाने समय पर्यन धरीर को जीनता है।

हीनसर प्रमञ्जी के घरवाद ?--

(१) मापक सविता अल का संपट्टन महि करणा गह उत्पर्धनार्थ है परन्यु सत्य मार्थ म होने पर गृहती ने गीवें

- दे, केन्द्र विकासका यह निकासील यह पुर्वावरेल का केसाहरू हार्या क्ष्मण, करिनारीलों जाय केरावरीकी करणा, निकासिकों जावद बृत्त-विकासकी सम्बद्ध, जारीलों काम सुन्यालनी स्थायकी सन्दर्भ गणावनाम कायद, श्रावकास एक्टिस केले, की के कान्य हार्यी कार्य हेराए पर्व, साम कार्या-पेराल-प्रविकास जन्मीति है। ——व्हान्यक स्वा कार्यकार
- के, भीर कार्य विश्वासका का विश्वानीका का दार मेहिन विश्वासय मा, विश्वीदान्य मा, त्यादिन्य मा, विश्वादान्य या, या माहत्य वा, माहती का पार्ट का गाहती का माहती वा माहताला का, वार्य का, वाह्यानी का विश्वी का, विश्वासी का योग्योगया, कार्याक मा भीताल, माहती का स्वाहत्य, कार्यानी का, वाहती का याव्यास म

mm 學次部 哲學 有19年代

কু ক্লেন্ত্ৰ স্বাধী ক্ৰিছিলন্ত্ৰ সংগ্ৰীন হ'ল বা তালাধীৰত স্বাধিক স্বা

- (११) जिस उपाध्य में राजि-भर ज्योति जलती रहे उस उपाध्य में साधक नहीं ठहरा करते परन्तु अन्य स्थान उपलब्ध न होने पर एक दो राजि पर्यन्त उस स्थान में ठहरा जा सकता है। १
- (१२) साधक गृहस्य के रहने के मकान में श्रत्मकाल भी न ठहरे परन्तु वृद्धत्व, रोग श्रीर तपस्या के कारण ठहर सकता है। र
- (१३) सावक गोचरी को जाते समय लघुशङ्कादि से युक्त न हो, यदि रास्ते में वाचा हो ही जाए तो स्थान के स्वामी की श्राज्ञा लेकर प्रास्कृ स्थान देख कर निवृत्त हो सकता है। "

 सहसा वा वलसा वा वाहाए गहाय रायंतेउरमण्पविसेष्जा ४, विधा वण्यं श्रारामगयं वा उष्जाण्गयं वा रायंतेउरजणो सन्वश्रोसमंता संपरि- क्लिवित्ताणं निविसेष्जा ५, इच्चेहिं पंचिहं ठाणेहिं समणे निगांथे रायंतेउरमण्पविसमाणे नाइकममइ॥

-- ठाणांग सूत्र पाराशाः

- १. उवस्सयस्य श्रंतीयगडाए सन्वराइए जोई फियाएज्जा, नो कप्पह निन्गंयाण् वा णिगंधीण् वा श्रहालन्दमवि वस्यए । हुरस्या य उवस्सयं पडिलेह्माणे नो लभेज्जा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वस्यए ॥ —शृहस्कल्प सूत्र २।६॥
 - —वृहत्कल्प सूत्र २।६ २. तिएहमन्नयरागस्म, निसिजा जस्म कप्पह ।
 - जराए श्रिमिभृश्रस्स, बाहिश्रस्स तवस्सिलो ॥ —दश्चैकालिक सूत्र ६।६०॥
 - गोश्ररगपिविही श्र, वच्चमुत्तं न धारए।
 श्रोगासं फासुश्रं नचा, श्रागुत्रविय बोसिरे॥
 - -दरावैकालिक सूत्र प्राशाश्हा

- (१४) महाबती साधक निद्या ला कर घनने उराधिय में प्रिते हैं परन्तु कोई वृद्ध, रोगी घोर तपस्वी धार्य घाटि ग्यु में स्थान के स्थानी की धाडा नेकर वहीं भी नुका धरता है।
- (१४) मापक लोग एक बार निधा लाकर उसी समय इसरी बार नहीं जाया करते, परन्तु लाए गए घाहार इस्म निर्मेंद्द न होने पर यदि किसी ने स्था महन नहीं होती हो हो इसरी बार भी जा सकता है।
- (१६) याम गाने न होने पर विकास मार्ग ने पारते गाँद पींग पितान आए की टहनी मादि का पत्तासन ने पता है।
 - शिवान्त्र मीक्ष्यमानकी, प्रस्तिका प्रिम्मूर्य ।
 युक्त मिनियुने बा, प्रतिविद्यान प्रामुखं ।
 —्यक्षीकानिक ग्रंथ वास्त्रमा।
 - ९. (क) विशव कित विषय । वास्त्रायको आ गीलि । नामक्ष्याक वृत्याको, स्तर्य वेत् स्त्रा व्यक्ति । नामके नामकाम्याको, स्वत्यान, क्ष्येक । विविद्याप पुरस्तियो, क्ष्येको सुक्षित स्व ।
- (वर) निर्माणीय सं नार्ववया-मुल्ले विन्यवस्थानेत्रास्य साम्पायनिक्षात्रं साम्पायनिक्षात्रं साम्पायनिक्षात्रं साम्पायनिक्षात्रं साम्पायनिक्षात्रं साम्पायनिक्षात्रं स्थानिक साम्पायनिक्षात्रं स्थानिक साम्पायनिक स्थानिक साम्पायनिक स्थानिक साम्पायनिक सामपायनिक सामपायनिक
 - t, it have at his given at marginary granning white

(१९) तममें तथा दशवें प्रायश्चित वाले को गृहस्यों बना क नई देश्या है। जाती है। किन्तु विशेषायस्या में नण की क्षित के लिके विना गृहस्की बनाए भी नई दीशा देकर नयमां देश देशयों प्रायश्चित है दिया जाता है। 1

(२०) सामजीनिक होने पर भी साधु साध्यो एक इसरे वे योदह प्रसार की वैमावृत्त नहीं करवा सकते, किन्तु कोई रेगावृत्य करने यामा न हो तो करवा भी सकते हैं।

प्रमा प्रकार व्यवहार मूत्र २।६११७ में रोग के कारण, पुरुषका मूत्र ४।१८३३२० में धर्मेदिनय का साम भीर व्यवहार पुरुषका में धक्या की पुलेमता तथा कुल्वका ४।२६

रे. काणुरहाप निवानुं स्वतिर्धिनुष्टे की काणह सम्बन्धानिकान्त्रे स्वतिर्धिन स्वतिर्धानिकान् । न्यायद्वतिर्धाने विश्वनुर्धे स्वतिर्धाने स्वतिर्याने स्वतिर्धाने स्वतिर्धाने स्वतिर्धाने स्व

पर्यनित्रं क्लिश्वं क्राविद्युतं को मान्यः समा मान्यव्यद्वियमः समाग्रीकात् । पर्यानियं निवसन् निर्देश्यं क्लब्दं सस्य मान्यव्यद्वियमः समाग्रीकात् ।

कार्यकर्षा है शिक्तों कार्यिश्या वह विविध्यों यह कायह शास समाध्य-विविद्यां अवदर्शनाय, अवह तक्त सन्दर्भ विविद्या ।

पार्थिक विकास स्वीतिष्ट्री का सिरिस्टी वह स्वारण स्वार स्वार स्वीतिष्टा स्वार्थिक्टी कार्य स्वार स्वार विवाद स्वारण

क्षणा के विकास के स्वाप का सामिति का का जिल्हा आगरिका के स्वाप के स्वाप के सामितिक की म

इसी पानर गण को तील कर काई सान् गणालाहरी विहारी, विलेल-किलारी, पानस्य-किलारी तथा सर्थन किलारी हो जाए पोर वह पुनः गव्य में पाना भाते, यदि उस में गंगम-पालन के भाग पानिष्य हों तो उसे पानोभना, प्रतितमण, तप श्रीर दीक्षा-देश के प्रायम्भित हारा शुन्न करके संगम में उपप्रस्थापन करना माहिये।।

७. भिरम् म चित्रम्मं कर्द्र, तं चित्रम्मं चित्रीमोत्ता, इत्हेला यन्तं गणं उपमंपित्तामां जित्रित्तम्, कम्पद्र सहस पत्र-सहित्रियाहं ध्रेपं कर्दु परिण्डियानिय २ तमेन गणं पितिज्ञाण्यत्ते सिया, जहा य तस्स गणस्स पत्तियं सिया ॥ —मृहस्कृत्य सूत्र पापा

कोई साधक क्लेश भगड़ा करके श्रीर उस क्लेश को उपशान्त किये विना श्रन्य संघाट्टक में मिलना चाहे, तो उसे पाञ्च दिन के दीक्षा-छेद का प्रायश्चित्त देकर श्रपने पास रखना कल्पता है। इस प्रकार रख कर फिर उचितावसर पर कोमल वचनों द्वारा उसे समभा-बुभा कर वापिस उसी संघाटक में मिला देना चाहिये जहां से वह श्राया था जिससे गच्छ में प्रतीति वनी रहे।।

८. से गामंसि वा, नगरंसि वा, निगमंसि वा, रायहाणिति वा एगवगडाए, एगदुवाराए, एगनिक्खमण्यवेसाए, नो कप्पइ वहूणं ध्रगडसुयाणं एगयग्रो वत्थए। श्रिथ या-इ यह केइ ध्रायार-पकप्प-घरे, नित्य यहं केइ छेए वा परिहारे वा; नित्य या-इ यहं केइ ध्रायार-पकप्प-घरे से सन्तरा छेए वा परिहारे वा।।

में गामीय मा ताप शम्मालिय का कार्जिन्यगण्य, कार्यनि मुख्याण, क्षितिसम्बाद्यां कर्षात् क्ष्याद बहुले क्ष्याद क्ष्यां कृष्यके ब्राह्म न्य सान्य कर्ष क्षेत्र कापात-स्थाप-परे क्षित्र अर्थ में प्रीत् मा परिदर्श थी। ित सान्त्र वार्त्र में हुं बामालन्यवायान्य है, हैं। सुरीमते कार्रिश स्थापते सार्वित - STATES STA BIR AND

होटे ग्राम में, नगर में, बड़े नगर में कीर सरकाती में मि सप्तिनं देश मा विति सा ॥ लेल मुकार हो दिसका एक ही छहा कुमका हो, कुछ ही नाह रो बोर माने जाने मां भी होते हों माने ही होते होता है बहुत हे सापनी हो, से कि सानात्रीत, मुनतत्रीत, विशीम साहित्यों के पड़े हुए गर्न, एक प्रमुख की जाता. यह लाहे की मामक, मालाना निकास प्राप्त है। यह रही है The same of the sa स्यो क्षांचारांग विशोध का वृत्ता वृत्ता वृत्ति हो। सार् नार् है की दिश्वी दिन की समझ दिन ना करने हुन हैं। हैंस्पर्टेंग्टर साम्सरिय त्या का प्रातिक्ता प्राणा है ॥

The Males which with the state of the state 美球性 新 地方 科 医球球 对一 机球球 机水体 电子 野洋 THE STREET WITHERS STREET STREET STREET STREET THE REPORT OF THE PERSON AND THE PERSON

I Then a decision well styled by the said of a second the street of the street of the Frederica to the first street are the first street of the said the form is thinking to be a second to the said the said the said to the said the said to the said the said to the sa

िकी माणक को, कुल मालको को माल लकर, महाजि पित कर किर किरण करने की उल्ला हुई लेखों स्थानि भगवान के किला पूरे उसे ऐसा करना ने के लेखात हैं। पित्र कर, योग के माणारण कर विवरण करने की जाणाम पूर्क याला प्रान कर के लो को गणायारण कर विनरण करना कलाता है; यदि रणिर भगवान याला न देतें, लो गणायण कर विचरण करना नहीं कलाता, यदि वह मालक रणायिं की माला विना गणभारण करके विचरण करे तो उसे उतने ही दिन का दीक्षा-केद वा पारिहारिक सप का पायदिनस माता है।।

३०. वदी साहिमाया इन्युका एमपयो व्यक्ति-नारियं वारए: सी गर्ड, कत्यद् शेरे व्याप्तिद्वा एमपयो व्यक्ति-नारियं वारए, कत्यद् सई थेरे साप्तिद्वा एमपयो व्यक्ति-नारियं वारए। शेरा य से निपरेजा, एवं सई कि कत्यद् एमपयो व्यक्ति-नारियं वारए; शेरा य से नी विपरेजा, एवं यई हो कत्यद् एमपयो व्यक्ति-नारियं वारए; शेरा य से नी विपरेजा, एवं यई हो कत्यद् एमपयो व्यक्तिनारियं वारए। जे तत्य शेरीई व्यनिद्वसी एमप्यो स्वक्ति-चारियं चरंति, से सन्तरा छेए या परिदारे या॥

—व्यवहार सूत्र ४।१६।

बहुत से सार्धामक साधक, ग्रभिन्नरूप एकत्र होकर विचरण करना चाहें, तो उन्हें स्थिवर भगवान् की ग्राज्ञा लिये विना ऐसा करना नहीं कल्पता, हां, स्थिवरों से पूछ कर ग्रीर वे श्राज्ञा प्रदान कर देवें, तो ग्रभिन्नरूप से एकत्र होकर विचरण करना कल्पता है, यदि वे ग्राज्ञा न देवें तो नहीं कल्पता; जो साधक विना ग्राज्ञा लिये ग्रभिन्नरूप से एकत्र होकर जितने दिन विचरण करें तो उन्हें उतने ही दिन का दीक्षा-छेद व पारिहारिक तप का प्रायश्चित्त ग्राता है।।

गामाणुगामं दृइजमाणो भिनस् य जं पुरश्रो कट्टु विहरह,
 शाहच विसुंमेजा, श्रात्थि या-इ त्य श्रन्ने केइ उवसंप्रजाणारिहे, से उवसंप्रिं-

में मित्र सान्य का कार्य केंद्र अवस्थित गानि, सान्य कावाले बावाल वाचाल कार्या करता हिंदि साने सा-वाचाल कार्या के क्षाराह्यां परिमाल वाचा जाता हिंदि साने सा-वाचा किर्देश मार्य सामा दिने उपिताल हो में में बावा करता विद्या-विदेशि मार्य सामा कार्या-विविध वाचा । स्थि का में बावाली कार्या की सामा वाचाली कार्या । स्थि का में बावाली के कार्या विदेशि वहाँ महामा भागादि कार्या ! स्थान वाचाल का द्रावाली का द्रावाली का प्रभावती का प्रमाण का द्रावाली का द्रावाली का प्रमाण का कार्य हैं। सामाल भी सामा पर क्षारावाली का द्रावाली का कार्य, में बावाल में। सामाल भी सामा पर क्षारावाली का द्रावाली का कार्य में कार्या कार्य कार कार्य कार

समामार्थ बार्गविको निमार्" (तथा ६६) महीत मा क्षित्रमे का व

मामानुषाम विवस्य कर्ते हुए सायस दिल प्रेस्टावी नता भार विभागा वार को भे, ने माल कर ज्या, तो एन नेत्राची में कोई साधन सम्तरम यसने मेरस है। यह सम सम्बद्धम् सम्बद्धः बारः विश्ववना स्वतं, एकान् ग्रह्मं संदर्भं धानमान - समाने के बोरम के होते. (बायदा के सूध मालक विषय कर विकास भी बहुत्यान से बना में हैं है और और बहुत्या में सिन्द हैं। धीर ्य सामी कामकासार के बाल्य के समर्थ हो, तो बेटर हो गत भारतक सामानार्थिक सामानार सामाना है गुरुको सामा सहीत से हैं है है andly to determine margine historic mit affeinent wit mebrum mit er रेल्सार्जन रेस्ट्रें के लात के राज्यकी क्ल्रेंन हैं। लात रेल्स् की The world and the second of th मा विद्या है है एक मेरे बचन में मारे हैं। जिल्हा स्थान मेरे मानव many while the state of the same thank it was 李明 八姓 女子 经产品 大大大大 医阿拉耳氏 大江 東京 東京中心 秦 ति चार्त ! एक-दो सानि योग ठारों वर्त भी एक पा दा रार्ति चोन चित्रक चटन जा सनता है किन् इस म उपरात नहीं। जो सामक इसमें उपरान्त निपने दिन ठटरें हम अने ही दिस का दीक्षा-देश ने पानिहास्कि नेप का चार्यालना चाता है।

इसी प्रकार भातुमीन काल में उतरे साम भें का यमनानी सामक काल-भर्म की प्राप्त हो जाए तो उने भी उपरोक्तानुनार करना कलाता है जो मार्ग में एक-दो राजि उपरान्त उत्रेती उमे उतने ही दिन का दीक्षा-छेद न पारिहारिक तप की प्रामश्चित साता है॥

३२, गामाणुगामं वृद्कमाणा निष्मंशी य जं पृश्वी काउं विहाद सा
श्वाहरण वीमुंभेजा, क्षिय यादृश्य काष्ट्र श्वा उत्तरंपज्ञणारिहा, सा उत्तर् संपिज्ञपञ्चा, निश्य यादृश्य काद्द्र श्वजा उत्तसंपज्ञणारिहा, तीमे य श्वष्णणो कष्पाण श्वसमश्चे, कष्पद्द सा गुगरादृयाण पित्रमाण जग्मं जग्मं दिमं श्रजाश्चे साहमिणीश्चे विहरंति तग्मं राग्मं दिमं उचित्तत् । नो सा कष्पद्द तश्य विहारवित्तयं पत्यण, कष्पद्द सा तथ्य कारण्यत्तियं वश्यण् । तीस च र्णं कारणीसि णिड्डियंसि परो चण्जा 'वसाहि श्रजी ! प्रगरायं चा दुरायं चा' एयं सा कष्पद्द प्रगरायं चा दुरायं चा वश्यण्, नो सा कष्पद्द पर प्रगरायात्रो चा दुरायात्रो चा चश्यण् । जा तत्य परं प्रगरायात्रो चा दुरायात्रो चा वसद, सा सन्तरा छेण् चा परिहारे चा ॥

वासावासं पज्ञोसविया निर्माधी ''(जहा ११) · हैण् वा परिहारे वा ॥ —स्यवहार सूत्र ५।१२॥

साधु के प्रकरण में जैसा अर्थ किया गया है उसी प्रकार यहां भी साघ्वी के रूप में समक्ष लेना चाहिये। विशेष इतना है कि 'नो कप्पइ निग्गंथीए एगाणियाए होत्तए'—वृहत्कल्प सूत्र ५।१५॥ के अनुसार कल्पाचार में समर्थ होते हुए भी और

कर्ष महोते पर भी दूसरी जगह जाते एककी न जावे, कम-मेन्स दो मिन कर घोर मागे में एक-एक रामि ठहरने की प्रतिता धारण गरके जावें।।

12. सार्विय-उद्याकाण् विकायमाध्ये सहयां बण्णा 'प्राचे! सण् यं कण्णाणि वसार्गाव सम्बद्धानायां । से य समुद्धानगारिं, त्यमुक्त रिल्प्ये; से थ सी समुक्तावगारिं, जी समुक्तावण्ये । स्तिय याण्य कार्ते केंद्र समुद्धानगारिं, से समुक्तावण्ये । सीच याण्य चार्ने केंद्र समुक्तसाण-रिंदे, सी सेव समुक्तावण्ये । सीच च यां समुद्धिय परी याण्या 'तुम्तमु-विद्व' ते कार्या | निवित्तवारिं ताल्य यां निवित्तवसायात्म्य क्रियं सेद्र शिष्ट या परिवारे ता । ते सम्बन्धिया च्याकापेनं तो बहाण् विद्राणि, स्पर्वेति हैति सार्यावयं सुंज् सा चरित्रों या ॥

-malligt ifin eldan

सामित्रतावातरण्यु कोहायभाषिः । । (सहा १६ रापर सिन्सम्पतिः) भगते भोदर्गतपिति () । । । भोद्रस्त सा स्वित्ति सा श

mentalit für Aldagi

भावती स्वाध्याय महाराज देश-यान की मौत साहि भारत भाषान भाषि दिलाई दे रहा हो सम समय स्वय स्वाध्याय नहां सम्बंध स्वीद की याम मृत्य ना मैं नहें कि है भारते हैं मेरे कान कर साहे यह इस यह वह स्वयू हो की सह सहाय दिन कान्य हैना कह कह में स्वयू का नाम् । सारस्थात् य स्थापनाय प्रचेश भाषि सम की महीसा नहीं, सदि प्रभावत् यह न मीना ही की यह दिना नह ही कह यह प्रशास कर देते । हिन्दू स्वीद मह इस यह है। सीम साहि की स्वयू यह यह महीसे सेता, साथ ने मीने स्वयू इस यह ने सीमा दिनाई देता हो सह यह यह सहस्य किया हो। यह साहि स्वयू ने हैं भी इस



भी सागार गुण को द्वारे विस्ता (वेगू में इंटरे गुण) है जा भेषा मरे सी क्षेत्र श्राष्ट्र गर्या सामाये, उपाध्याय, मिरिया गर्मी श्रीत गुलास्टिविस की पहली देना द्योर हो।

(11) that sharp sharps the shipping the मार्थे गानना गापणं को नहीं कलात ॥ The state of the s भूतिमानं भा ताल्यां भा । ह्यां संस्थानं स्थापनं स्थापनं स्थापनं स्थापनं स्थापनं स्थापनं स्थापनं स्थापनं स्थापन STALL SALLACES SALLAC BLEN LA 13 BAR SAULETA AL MA SAULETANI IL RELEGIAL AL क्षेत्राम का विशे हो हो हो हा (वाहरों) है जाई distant at the

MAN ARTHUR STORY OF THE STORY O Manual Ma THE REAL PROPERTY OF THE PARTY ATT THE PARTY HAVE BEEN AND TH The state of the s THE REAL PROPERTY AND THE PARTY AND THE PART THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PROPERTY AND THE PROPERTY OF THE PROPER THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY O THE REPORT OF THE PARTY OF THE

Back and beautiful the first of the charge of the (111) interpretate discounting their sold procedure from the The same which was a said and the same of which the state of the property that the party that the



मीर बालाये, अपने धालाये पर का संघ के समझ स्थान-सामारी-प्राप्तित केल मेनम की द्वार प्रणा को हुए। येथ्या महोतार हुई कोण होने पर तीन वर्ष तेव तो को लोह त्य हैना नहीं क्ता, हो नागुर्ग वर्ग वन अने में वर्गान समय गरमान और कर मध्य में प्रवेतितानुसार होता हो। हो। वोगतनानुसार स्टालावे कारि मोर्ट भी पर दिया हा सकता है।।

[11] Salend Halinery Spilesten Salender Salender Constitutes the Bibles Senter (week 2123) . . . Market at 11

Kill shirten " minister of the fact of the state of the state of Andre Markey ((whit & 19 th) ... confirmed the fi

स्त्री पूर्वी निर्देशका संस्था होता निर्देश स

(4) (1) Estable at the line thereting the same at the same at the same ALL SALLANDS MILES AND MILES MANAGEMENT MARKS STATES STATES The street of the state of

Section service on the section of th MARKET STATE OF THE PROPERTY O A SE THE PARTY SET OF T The second secon The state of the s The state of the s The state of the s The state of the s The state of the s

गाँद सायक गण की रहोड़ कर मसंग्रमी मृत्ति कर ने मयवा परियमी मृति न भी करें परन्तु मार्ग्य में प्रावार साधु-रंग की डोड़ दे धीर गृहस्य-वेग म सम्प्रतीयों की वेग की पास्त्र कर में इन्तु सरकास सनिन्तु में माकर पुनः उसी गण में साम्मितिन इन्तु सरकास सनिन्तु में माकर पुनः उसी गण में साम्मितिन शांत माहि ती उसे कोई देख म तम प्रायम्भित नहीं दिया जाता शांतु माठ्या 'मृस' प्रायम्बित माता है. उसे दिवीय-गार्म्य महाश्रव मारोपन करवा कर समम में उपस्थापन किया जाता है।।

्रिलास्त्र एवं लिल्लु के चलिस्सि की मृत्यादक्षेत से मर्थमा प्रतित हो आग् उसे भी साठवां 'मृत्य' प्राविचल साला है।]

क, संबंध ने काम उत्तर जाने के प्राप्त केन मूलि जी महारक्षण के क्षमण भगवान् करायीक स्थानी के दिलीय-पार महारक्षों की पारण विवारी अ

के स्वतिक क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यवस्थित क्षेत्र क्षेत्

如 縣子等等 中心性的 医性神经 经经济股份 经经济股份 经公司



Similarly Courty friends of the said their extended forest water free it

इसीत् इत्यस्थात्य प्रावित्यम् याति की विना मृहस्य यसार् मेमा भे ज्यस्थाल काला मनावक्ता की को गरी क्लाता, मनावकारक को दमें मुहारी समा कर वित गर

ेशा देवी स्वास्ति ॥

नगरं प्राप्तित्वत के खीवनारी— मनी वाल्यामा व्यक्तात तं क्यां-मार्थिसवातं हेरलं वहेसाते १, काम अधिकवाली हेंग्स प्रदेशाणी २, इत्याली वृत्रवसारी ३॥

—शतीत सूत्र श्राप्तात्रवातं — वृत्त्रवातं सूत्र याथा

रे. स्वमर्गी = स्पता के सामु मान्ती के भंडीपकरण ग्रन्म पत्र, सर्व पात्र, बाहन मया विल्य की भीती करने वाल-मिना पूर्व क्षेत्र वाल सामक गत 'धनवर्षाना' नामन नवम प्राप-

२. पन्यमी=पर्मात अर्थात् अन्यतीर्थी सापु, अगवा स्थमत रामा परमत दोनों प्रकार के गृहस्यों के अण्डीपयारण की हिनस साता है। ोरी करने यात सामक की 'झनवस्थाच्य' प्रायदिवत

३. प्रस्पर में मारामारी भीर लढ़ाई मारने चाले [भ्रयवा प्राटांग निमित्त की प्रमणणा करने वाले । सायक की नवम मता है। 'मनवस्याच्य' प्रायदिचत्तं स्राता है। (बतावा हुमा ज्योतिष,

१. सानुनमं को क्रोदा सन गृहसा पर-भगं य पर-पद में

२. युरत्कत्य रात्र पूच्य प्रभोलक ऋषि जो महाराज ॥ । प्रे धाप

गणित यादि में पृति रह लाने पर पुरा न उनरे को सापुर्यो की स्थिर जिन-सामन को निन्दा होती है)

षाठों 'मूल' प्रायश्चित में दोष प्रकट नहीं होता घौर इस नवम अनवस्याप्य प्रायश्चित में दोष प्रकट रूप में (openly, in public) होता है इस लिए उसे लोगों के समक्ष मृहस्य का वेष पहिना कर फिर नई दीक्षा दी जाती है। 'यादि' शब्द से प्रकट रूप में भूठ चोलने वाले, कुशील सेवन करने वाले श्रादि प्रायश्चित्तयों को भी यह 'अनवस्थाप्य' नवम प्रायश्चित्त दिया चोता है।।

१०. पाराञ्चिक-

तीर्थकरादीनां बहुश श्राशातनाकारिणि, नृपघातके,
नृपाग्रमिहपीप्रतिसेवके, स्वपरपक्ष-कपाय-विषय-प्रदुष्टे, स्त्यानिर्दि निद्रावित पाराश्रिकप्रायिचत्तम् । स त्वव्यक्तिङ्गधारी
जिनकल्पिवत् क्षेत्राद्विः स्थाप्यते द्वादशवर्षाणि, यदि प्रभावनां करोति तदा शीष्रमेव प्रवेश्यते गच्छे शुद्धत्वात् ॥

नई दीक्षा एवं गृहस्थ-वेप के श्रतिरिक्त जो दीर्घ समय (वारह मास उत्कृष्ट वारह वर्ष) तक विधि रूप से रहकर जो प्रायश्चित का पार पाता है उसे पाराञ्चिक नामक दसवां प्रायश्चित कहते हैं।

जो दोप, जितना प्रकट-रूप में होता है उसका प्रायश्चित भी उतना ही प्रकट-रूप में दिया जाता है। यदि ऐसा न किया जाए तो अपने तथा वाहिर के लोगों में यह अपवाद फैल जाए कि 'इन में तो ऐसे ऐसे कुकर्म करने वाले भी छिपे वैठे हैं।' स्व प्रकार इस वेष की एवं जिन-शासन की निन्दा होती है।

पतः जो दोष जितने श्रंश में प्रकट-रूप हो, उसका प्रायरिचत भी उतने ही प्रकटरूप में होना चाहिए। इसलिए दसमें

प्रायिविक्त का श्रिधकारी साधुवेष छोड़ देता है भीर गृहस्य
का कोई विशिष्ट वेष बनाकर (मस्तक पर चार श्रंगुल प्रमाण
का वस्य बांच कर) बारह मास भीर उत्कृष्ट बारह वर्ष
पर्यन्त साधु के सब नियमों का यथाविधि पालन करता हुआ
और ग्रामानुग्राम विचरण करता हुआ लोगों के हारा अनादर
अपमान को समभाव-पूर्वक सहन करता हुआ उतने समय का
पार पाता है, उस अवधि में यदि वह जिन-शासन की प्रभावना
करे तो समय घटा भी दिया जाता है, इस प्रकार समय पूरा
करके वह नई दीक्षा घारण करता है।।

ं दसवें प्रायदिवत्त के श्रधिकारी-

तत्रो पारंचिया परणता तंजहा—दुट्टे पारंचिए १, पमते पारंचिए २, श्रमणमर्थ्यं करेमाणे पारंचिए ३॥

—हाणांग सूत्र ३।४।१२॥, —वृहत्कल्प सूत्र ४।२॥

 दुष्ट दो प्रकार के होते हैं, कपायदुष्ट श्रीर विषय-दुष्ट । कपायदुष्ट के दो भेद – स्वपक्ष-कपायदुष्ट श्रीर परपक्ष-कपायदुष्ट । स्वपक्ष-कपायदुष्ट के भी पान्च भेद प्रतिपादन किये गए हैं—

पंचहिं ठाणेहिं समणे निगांथे साहिम्मयं पारंचियं करेमाणे गाइक्षमइ तंत्रहा—कुले वसद कुलस्स भेयाप अञ्मुट्टेला भवद, गणस्स भेयाप अञ्मुट्टेला भवद, हिंसपोही, छिदपोही, अभिक्लगं अभिक्लगं प्रसिगाप तेणाइ पठला भवद् ॥

(क) जिस कुल में रह रहा है, उसी में फूट डलवा मूर

्रे. मापु साधु के माथ घोर साध्यों साध्यों के साथ प्रसंपर विषय सेवन करे।

इन सब को दसवां 'पाराश्विक' प्रायदिवत्त सेना होता है । तीर्षेक्द देव की, केविस-प्रकृषित सास्त्र एवं जिन-धासन की बहुत बारे प्रासातना करने वासा भी इस दसमें पाराश्चिक प्रायदिवत्त का धनुष्ठान कर प्रापनी श्रातमा को घुद बना क्यता है ॥

ुष्ध गोतायाँ को घारणा है कि नवम प्रायदिवस उपाध्याय को तथा दशम पाराध्यिक प्रायदिवस घातार्य को दिया जाता है।

किसी का कहना है कि ये दोनों प्रायश्चित, चीदहपूर्व का जान और प्रयम संहनन न होने ने तथ की धर्मेक्षा व्ययच्छेद हो चुके हैं, और कोई कहता है कि यह दसवां पाराञ्चिक प्रायश्चित पूर्णतया विच्छेद है।

किन्तु पृष्ठ ५७ में व्यवहार सूत्र २।२२,२३ के अनुसार अपवाद रूप में नवमें तथा दशमें प्रायद्वित्तती को आठवां मूल आविद्वित्त भी दे दिया जाता है॥

एवं सदयं दिज्ञति जेणं सो संजमे थिरो होति । न य सन्वहा न दिज्ञति श्राण्यत्थपसंगदोसातो ॥ -स्यवहार सूत्र बहेश १० भाष्यगाया ३८०॥

(१) श्रतिकम का प्रायश्चित 'ग्रालोचना'। प्रमाद की कोहिया (२) व्यतिक्रम का प्रायश्चित 'प्रतिक्रमण' (मिथ्य डुप्कृत देना)। (३) श्रीतचार व सामान्य प्रमाद के श्रनाचार का प्रायश्चित 'तहुभय'। (४) उपयोग भङ्ग के श्रनाचार का प्रायश्चित्त (४) केवल काया, केवल वचन व केवल मन कें श्रनाचारों का प्रायश्चित्त 'ज्युत्सर्ग'। (६) विशिष्ट प्रमाद से उद्भूत भ्रतिचार व भ्रना-चारों का प्रायश्चित्त 'तप'। (७) कुछ जान-व्रुक्त कर सेवित अनाचार का प्राय-श्चित 'छेद'। (८) सर्वथा जान-व्रुक्त कर श्रासेवित श्रनाचार का प्रायश्चित्तं 'सूल'। (९) प्रकट रूप से जान-वूम, कर सेवित भ्रनाचार का प्रायश्चित्त 'त्रनवस्थाप्य'। (१०) महान् अनथॉत्पादक जान-व्रुक्त कर सेवित श्रनाचार का श्रायश्चित 'पाराञ्चिक'।। ये प्रायश्चित जिन २ में हो सकते हैं वे इस प्रकार हैं — पुलाक निर्मन्य में छः प्रायश्चित-ग्रालोचना १, प्रतिक्रमण २. तदुभय ३, विवेक ४, ब्युत्सर्ग ४, श्रीर तप ६ ही सकते हैं।

त भीर प्रतिनेपना-मुर्जीन में दम ही प्रामित्त हो । परना जो जिन-नत्यों हैं उनमें सादि में ब्राठ ही हो नंग्रेंन्य में यो प्रायक्तित ही सनते हैं। धालोचना घीर स्तातक में केवल एक विवेक प्राविधित होता है॥ 13

सामाजिक-सारित्री में छेद भीर मूल की छोड़ कर लेप भाठ प्रायश्चित हो सकते हैं। किन्तु जो नामायिक-चारिकी जिन-कली है उनमें आदिम छः प्रायम्बित हो हो सकते हैं।

हेहोगस्यापनीय-नारियों में दस ही प्रायध्रित हो समते हैं किन्तु जो हिदोपस्यापनीय जिनगत्यी हैं उनमें श्रादि के श्राठ

प्रायाश्चित ही हो समते हैं।

परिहारिवगुद्धि-वारियो में भ्रादि में भ्राट भीर जो परि-हारविगुद्धि-बारियो जिन-गल्पी है उसे हिंद श्रीर मूल को छोड़

कर आदि के छः प्रायश्चित हो स्कते हैं। मूहमसम्पराय-नारित्री श्रीर यथान्यात-नारित्री में दो.

प्रायस्थित हो सकते हैं - ग्रालोचना ग्रोर विवेक ॥

पायच्छिते असंतमिः

चूलिका

षायिन्ति हो प्रकार के होते हैं--कालम प्रीर् दिलाम। श्रालोचना श्रायश्चित्त किल्मिम श्रामश्चित्त की भाग निव प्रकार के प्रायश्चित्त सब-के-सब दिल्ला प्रायश्चित है? १. कलानीय, ग्रानरमा करने योग्य कार्यों का श्रालीनना-मायश्चित्त, श्रतिकम की संभावना की श्रवेता से है। २. तं पुण होन्जा सेनिय दलोगां श्रहन होन्ज क्लोगां। दलेग दसविहं त् इगामो उच्छं समासेगां॥ दण व श्रकण निरालंग निगत्ते श्रपसत्य वीसत्गी। त्रपरिच्छे श्रक्तडजोगी श्रमागुयाची य गिस्संको ॥ े व्यवहार सूत्र उद्देश १० भाष्यमाथा ६३३,६३४॥ —दर्प निष्कारमां धावन-यल्मन-वीरयुदादिकरमां १। श्रक्लपोऽ-परिणत-पृथ्वीकायादिग्रह्णमगीतार्थानीतोषधि-राज्याहाराशुक्मोगश्च २ । निरालम्बो ज्ञानाद्यालम्बनरिहतप्रतिसेवनाको ३ । वियत्ते ति पर्देकदेशे पदसमुदायोपचारात्यककृत्यः संस्तरन्निव सन्तकृत्यं प्रतिसेव्य त्यकचारित्र इत्यर्थः ४ । अमराम्तो वलवर्णादिनिमित्तं प्रतिसेवी । ५ विश्वस्तः स्वपद्यतः परपद्यतो वा निर्भवं प्राणातिपाताहिसेवी ६ । श्रपरीची युक्तायुक्तपरीचाविकलः ७ । श्रक्तयोगो श्रगीतार्थः । त्रीन् वारान कल्प-मेपसीयं चापरिभाव्य मयमवेलायामि यतस्ततोऽल्यानेपसीयमिप याही ८ । अननुतापी श्रावादपदेन कायानामुपद्भवेऽपि कृते परचात् अनु-तापरिहतः ह । निःशङ्को निर्दयः इहपरलोकराङ्कारिहत इत्यर्थः १०॥ चउवीसई विहार्ण तमहं वुच्छुं समासेगा॥

देपिय प्रायध्वित्त ज्ञान-विषयक, दर्शन-विषयक श्रीर चारित्र-

दंसग्-ग्गाग्-चरित्त तव-पवयग्-समिति-गुत्तिहेउ वा । साहम्मियवच्छुल्लेग् वावि कुलतो गग्यस्स वा ॥ संपरसा-ऽऽयरियस्स य श्रसहुस्स गिलाग्य-वाल-गुड्दस्स । उदय-गि-चोर-सावय-भयं-कन्ताराऽऽवत्ती-वसग्रे॥

-व्यवहार सूत्र उद्देश्य १० माध्य गाथा ६३५, ६३६,६३७ ॥ —दशंने दर्शनप्रभावकं शास्त्रग्रहणं कुर्वन्नसंस्तरणे १। शाने स्त्रमर्थ नाधीयमानो असंस्तरे २। चारित्रे अनेपगादीपतः स्त्रीदीपती वा चारिवरसंगाय ततः स्थानादन्यवं गमने ३ । तपित विकृष्टतपोनिमित्तं ^{धृतवा}नादि ४ । प्रवचनेरक्तादिनिमित्तं विष्णुकुमारादिरिव वैक्षियकुर्वा-खादि ५ । समितौ ईर्यासमित्यादिरक्णिनिमित्तं चलुसः सावद्यचिकित्सा-. करणादि ६ । गुप्ती भावितकारणतो विकटपाने कृते मनोगुप्त्यादि रत्वणनिमित्तमकल्प्यादि ७ । साधर्मिकवारसल्यनिमित्तं ⊏ । कुलतः कार्य-निमित्तं १। एवं गणकार्यनिमित्तं १०। संवकार्यनिमित्तं श्राचार्यनिमित्तं १२, ग्रासहनिर्मित्तं १३, ग्लाननिमित्तं १४, प्रतिपिद्ध-वालदीन्तितसमाधिनिमित्तं १५ । प्रतिपिद्धवृद्धदीन्तितसमाधिनिमित्तं १६, उदके जलप्लचे १७, छम्नी दवाम्यादी १८, चीरे शरीरोपकरगापहारिगि १६, श्वावदे हिंसा न्याघादावापतित यद्वृद्धारोहरणादि २०। तथा भये म्लेन्छादिसमुत्थे २१। कान्तारे ग्रट्यमानभक्तपानेऽध्यनि २२, श्रापदि द्रव्याद्यापत्तु २३ । व्यसनं मद्यान-गीतगानादिविषये पूर्वाभ्यासतः प्रवृत्तिः २४ । तत्र यद्यतनया प्रतिसेवते स कल्पः । एतदेवाह-

एयन्नतरागाढे दंसग्गनागो चरगासांवी । परिसेविड क्याई होइ समत्यो पसत्येसु ॥६३८॥

—एतेपामनन्तरोदितानामन्यतरिमन् त्रागाढे (श्रावश्यके) समुत्यित-दर्गनज्ञानचरणसालम्बः प्रतिसेन्याकल्प्यप्रतिसेवनां 'कृत्वा कदाचित्र- विषयक होते हैं। वियत्त-किच्च=व्यक्तकृत्य अर्थात् कृतयोगी गीतायं द्वारा किये जाने वाले कार्यं का प्रायश्चित्त, किष्पय प्रायश्चित्त होता है। इस प्रकार किष्पय श्रीर दिष्पय श्रायश्चित्तों में दसों प्रकार के प्रायश्चित्त समाविष्ट हैं।

जिस साधक के तप-रूप दिष्पय प्रायश्चित वाले कई प्रति-सेवना दोप एकत्र हो जाएं तो सामूहिक रूप से सत्र दोपों के प्रायश्चित्तों को मिलाकर जो एक प्रायश्चित्त कर दिया जाता है, उसे संजोयणा-प्रायश्चित्त कहते हैं।

किसी प्रायश्चित का अनुष्ठान करते हुए सायक नया दोष लगा बैठे तो उस दोष का प्रायश्चित पहले प्रायश्चित में बढ़ा दिया जाता है, इसको आरोपणा-प्रायश्चित कहा जाता है।

यानोनना करते समय यदि कपट का श्रानरण किया जाए तो इस कपट-श्रानरण का पृथम् रूप में श्रायश्वित दिया जाता है जिसे कि पश्चिकुञ्चन-श्रायश्चित कहते हैं।

शर्मापु भुमेलु प्रयोजनेषु कर्ताभेषु समसी भारत । तत प्रपा कल्यिका प्रतिस्ताना ॥

 १. विभिन्न प्रापा दिन प्रमान सं जहा — माम-प्रापाल्दिन, देसण-प्राप्त देन, विकास दिन ॥ — ठामांम मृत्र शांत्र ११

र, इ.स. १८ वर्षा दुन पर्णात ने जहा-स्माग-पापन्छिन, देसग्-परम ६७, चीर रुपान्छन, निमन्तिस्व ग्रापन्छन ॥

—डामाप यह अस्तरश

 इ. तक्कि प्राची जुले प्रमणने तंत्रहा--- प्रतिभवणा-पायन्छिने १, सन्दर्भन्तर प्रवेश दुवि १, अवस्थिणा-पायन्छिने १, प्रतिप्रविभागाप-१७०० -- इत्हाम वक्कि १११२॥

कर एक ५ १ १ १ वर्ष अम्माना नेस्य-पदाविषा (प्रामाधिका

जो साधक इन प्रायश्चित्तों को ग्रंगीकार एवं स्वीकार नहीं करता ग्रपितु ग्रपने दोषों को बढ़ाता ही चला जाता है, तो उस से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया जाता है जैसे कि —

पंचहिं ठालेहिं समग्रे नियान्ये साहम्मियं संभोह्यं, विसंभोह्यं करे-मार्थे खाइक्कमइ तं जहा—सकिरिय-टाणं पडिसेवित्ता भवह, पडिसेवित्ता ग्रो श्राकोपुद, श्रालोपुता ग्रो पद्विवेद्दं, पद्विवेत्ता ग्रो खिव्वसइ, जाइं इमाइं थेराणं टिइ-प्यकःपाइं भवंति ताइं श्रद्शंचिय श्रद्यंचिय पडिसेवेइ से 'हन्द ! हं पडिसेवामि किं मे थेरा करिस्संति'।

—ठाणांग सूत्र पाशाश्रशा

श्रयांत् जो दोप का सेवन करता है, सेवन करके उसकी श्रालोचना नहीं करता, श्रालोचना करने पर गुरुजन जो श्रायिश्चत्त देवें वह श्रङ्कीकार नहीं करता, श्रंगीकार करके भी उसे उतारता नहीं श्रीर स्थिवर मगवन्तों ने जो मर्यादाएं बांघी है उन्हें वारम्वार तोड़ता है श्रीर कहता है कि 'हां ! मैं तो ऐसे ही करूँगा, देखूंगा स्थिवर मेरा क्या विगाड़ जेंगे'। ऐसे व्यक्ति के सम्भोग काट दिए जाते हैं।

इस प्रकार के जो प्रत्यनीक व्यक्ति हैं, उनके साथ सम्भोग नहीं रखे जाते जैसे कि-

श्चर्यात् सीम तप करवाना), ठिवया (स्थापिता श्चर्यात् स्थापन कर रखना), किवणा (कृत्सना अर्थात् क्रोध-रहित तप करना वह पूर्णतप है), अकिवणा (अकृत्सना अर्थात् क्रोध सहित तप करना वह अपूर्ण तप है), हाडहडा (इतहता अर्थात् अवस्था एवं शक्ति देखकर दिया नाया तप ॥
—ठाणांग सूत्र ५१२११४॥

१. इन्द च गृहाणार्थे ॥८।२।१८१॥ —हेम-न्याकरण्॥

नींक में सूत्र, अर्थ और तदुभय तीनों प्रकार के प्रत्यनीक माने जाते हैं।

तपस्वी, रोगी श्रीर शैक्ष का अनुकम्पा-प्रत्यनीक तथा इहलोक, परलोक एवं तदुभयलोक का गति-प्रत्यनीक—ये छः प्रकार के प्रत्यनीक तो श्रपनी हानि तक सीमित रहते हैं परन्तु उपरोक्त नव प्रकार के प्रत्यनीक तो श्रपनी हानि करते हुए गच्छ की भी हानि करते हैं अतः उनके साथ गच्छ के सम्भोग काट दिये जाते हैं।।

उपरोक्त प्रसङ्गों में तो, प्रायश्चित्त न होने तक १२ प्रकार के सम्भोगों में से कुछ सम्भोग काट दिये जाते हैं किन्तु जो प्रायश्चित्ती धागमानुसार प्रायश्चित्त को ग्रङ्गीकार ही न करे, उसे तो गच्छ-वाहिर ही किया जाता है ग्रर्थात् उसके साथ गच्छ का कोई सम्भोग नहीं रहता जैसे कि कहा है—

मिक्तू य श्रहिगरणं कटटु तं श्रहिगरणं श्रविश्रोसवेता—नो से कप्पड् गाहा— वड्कुलं मत्ताप वा पाणाण वा निक्तिमत्तप् वा पविसित्तप् वा, नो से कप्पड् बहिया विवारमूमिं वा विहारमूमिं वा निक्तिमत्तप् वा पविसित्तप् वा, नो से कप्पड् गामाणुगामं वृङ्गितत्तप् वा, गणाश्रो गणं संकमित्तप्, वासावासं वा वत्यप् । जत्येव श्रप्पणो श्रायरिय-उवज्ञमायं पासेज्ञा वहुस्सुपं वन्न्मागमं, कप्पड् से तस्सित्तिष् श्रालोएतप्, पडिक्किमत्तप्, निदित्तप्, गरिहत्तप्, विडिट्टितप्, विसोहित्तप्, श्रद्मिद्वतप्, श्रहारिङं पायन्छितं त्वोकनमं पिट्टि चिज्ञत्तप् । से य सुप्णं पट्टितप्, श्राह्मस्त्रे सिया; से य सुप्णं नो पट्टिप् नो श्राह्मके सिया । से य सुप्णं पट्टिक्जमाणे नो श्राह्म्य सिया।

कोई सामक किसी से क्लेश कर वैठे, जब तक वह क्लेश को शान्त करके क्षमा-याचना न कर ले, तब तक गोचरी को पाना, एपाने को एका, रक्तापाय वर्गा, विषय करना, दूसरे सम्बंधिक में दूरिकार करना और प्राह्मिक न र भी रुपाने करना पो कर प्राह्मिक न र भी रुपाने कि पाने कर समने कि का पोस्तारिक न प्राह्मिक कर सामने कि का प्राह्मिक कर प्राप्ताया, पर्प्त परिवारिक नप) यि हा कर सामा हों, पहां जा कर प्राप्ताया, प्राप्ताया, पिकाप, निव्देश, पर्ही, विद्वार को प्राप्ताया करें, पापे के लिये ऐसा न करने का मन में इंड सद्धाल करें और किये हुए का ग्राप्ताया मिन्देशिक प्राप्ति प्राप्ताया प्राप्ति परि प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति परि प्राप्ति परि प्राप्ति परि प्राप्ति परि प्राप्ति परि परि प्राप्ति करके गण्द-नाहिर कर दिया जाना नाहिये ॥

जो तृतीयवार कपट का आनरण कर सभा में प्रायश्चित्त पा नुका हो और चतुर्यवार पुनः कपटाचरण करे तो उसे भी विसंभोगी गन्द-बाहिर कर दिया जाता है —

निर्ति हाणेति समाणे निमान्ते साहम्मियं संभोइयं, विसंभोइयं करे-माणे नाइनकमइ तं जदा—सङ्ं वा दृष्ट्यं, सिड्व्यस्स वा निसम्म तस्यं मोसं खाउहद, घडत्यं नो खाउहद् ॥ —हाण्ति सूत्र ३।३।६॥

किसी ने दोप-स्थान सेवन किया, उसकी घुद्धि करने के हेतु उससे स्वीकार करवा कर प्रायिद्यत्त देने के लिए उससे पूछा गया, उसने साफ़ इन्कार कर दिया, यदि प्रायिद्यत्त देने वाले ने अपनी आँखों से उसका दोप-सेवन देखा है, तो उसे पूरा प्रमाण देकर प्रायिद्यत्त देवे एवं गुद्ध करे। दोप-सेवन का प्रायिद्यत्त और कपट कर भूठ वोलने का प्रायिद्यत्त

पृथक् वृथक् देकर श्रीर फिर दोनों को भिलाकर संजयोगा-प्रायरिचत दिया जाए। यदि उसे दोप सेवन करते हुए को स्वयं न देशा हो तो जिस विस्वास-मात्र ने अपनी भीतों देशा हो, उससे मुन कर उस दोषों को प्रायिक्वत दिया जाए।

एक बार तो ऐसा कर दिया गया परन्तु उसने दूसरी बार किर दोप का सेवन किया और पृष्टने पर भी किर कपटाचरण कर भूठ बोला, तब भी उपरोक्त प्रकार से उसे प्रायश्चित

'दिया जाए ।

गृदि वह तीसरी बार भी ऐसा करे तो उपरोक्तानुसार उसे

गिर वह ढीठ चतुर्थ वार पुनः दोपनेवन करे भीर पूछे मा के बीच संजीयणा-प्रायदिवत मिले। जाने पर माया करके भूठ बोले तो पूरा प्रमाण मिल जाने पर उसे कोई प्रायश्चित देने की शावश्यकता नहीं श्रिपतु

उसे विसंभोगी कर गच्छ से बाहिर कर दिया जाता है। कीन सायक भ्रपने कपटाचरण को छिपाता है भ्रोर कीन उसकी सम्यक् प्रकार भ्रालीवना करता है इस विषय में सूत्र-

तिहि ठाणेहि मार्था, मार्थ कर्ह यो ग्रालोएजा, यो पडियक्सेजा, ची मिहेना, ची गरहेना, ची विउरहेना, ची विसीहेना, ची शक्तवायाप कार प्रतिपादन करते हैं-ग्रहमुख्या, गो श्रहाहिं पायन्छिनं त्रवोध्यमं पहिच्यांमा तं जहा _ठाणांग सूत्र ३।३।१॥

ग्रामींसु बाहं, क्लिम बाहं, किस्सामि बाहं॥

मायावी, कपटाचरण कर तीन कारणों से गुरु-साक्षी में नालोचना नहीं करे, मिय्यादुष्कृत न दे, नसे बुरा न समके उसमें पूरां न करे, पागे के लिए न करने का संकला न करे. चीर चित्रनारों की सुद्धि कर ययायोग्य तप-प्रायश्चिता गृहण न करें। जैसे कि—

- (१) मैंने स्वयं यह कार्य किया, पन मैं इसकी कैसे विकास करें।
- (२) यह कार्य भें घा भी कर रहा हूँ . इसको मैं कैसे इस ग्रा
- ें (३) पर्कार्य भेंने सब भी करना है, इसलिए इसका वैकेस्परिकार ग्र

निर्दे स्टोर्टि मापी, सार्प कर्यु को याजीपूना को पविक्रमेणा जाव को उत्तिक्षेत्र ने जुदा -क्टिम्सं या में सिपा, युवती वा में सिपा क्टिन्स के में सिपा ।

१५ वर्षि व्यक्ति पाय को प्रश् करोगा तो भेरी बातीति
 १८८ १ १८० भटा पायणी गर्दे होगा और (३) लोग भेरी
 १८६ १८० भटा भटि व करगा।

ेर्ड १८ - भाषा, साथे ४२६ मां भानीएक नाव मो पहिन्दिता २ - ४ १ व मेललस्या, नामे सभी पहिन्दस्या, प्रमासकारे प २ २ - ४४५४ (

- त्र विद्यार हो चोदी हुई असम्मोति (१) गर्मण ११ वर्ष का १००० (११) स्टेश पुत्र सोर्क्स मन्द्रिय सम्मित् १००० (१)
- ्रता । वा ता वा वा तात्र त्याचा आविष्टिक्याचा चित्राता त्याचा तात्र ता वा वा व्यक्तिस्थानी स्थापन व्यापन व्यक्ति व्यवह्न इत्रास्था वित्र कार्यो व्यक्तिस्थानी व्यवस्थान

नाओं से बालांगना करते हैं, नियमदुष्ट्रत ऐते हैं, उसे मुरा गमभते हैं, उस क्षयदावरण में पृणा करते हैं, बाने को न करते का क्षय सन्द्रान्य मन में पार्य करते हैं और नमें हुए पितनारों की सुद्धि कर उम का समान्योग्य प्रायद्वित पहुंच करते हैं—

(१) मदि में भवता थार गुष्त रुद्ंगा सी वह कभी गुष्त न रह सकेना फिर मोगों में धिक्त निन्दा का पात अनेगा।

(२) माया-दास्य से मृत्यु पाकर दुवैति में जाना पड़ेगा।

(२) यहाँ प्रापु समान्त करके फिर मनुष्य लोक में प्रश्नेष्ठ पुलों में जरम धारण करना पड़ेगा ।

निर्दि राणेदि मापी, मापं कर्टु आसीत्त्र जाव परिवर्गामा सं जता— भगवित्य में कर्षत मोगे प्रमुखे भवर्, उत्पापु प्रसुखे भवर्, शायाई प्रमुखे मंबर् ।

(१) प्रपनी भूल मानने से घोर उसका परनासाप करने से इसं लोक में प्रमंता होतो है कि 'घन्य है जो भ्रपमा जन्म सुपार रहा है।'

(२) भालोचना करने से जिनामा का भारापक होता है भीर मृत्यु के पम्चात् इन्द्र के सामानिक देव भादि की पदवी

याता है।

(३) यहाँ ते श्रामु पूर्ण कर फिर श्रेष्ठ कुलों में जन्म धारण करके श्रपना कल्याण करता है।

निर्दि राषेटि मापी, मापै कर्टु बालोएमा जाव परिवासेमा में जहा— न्यागहराण, इंसलहयाण, चरितहयाण ॥ — राणांग सूत्र ३१३१३॥

इत्तम जीव श्रपने ज्ञान, दशैन एवं चारित्र की वृद्धि के लिये श्रपने कपटाचरण की श्रालीचना करके उसका प्रायदिचत्त श्रंगी— कार करते हैं॥

स्वितिय-ट्रायम्माण् गर्णासि स्वाणं वा धारणं वा नो सम्मं पर्वजिता भवह १, धापिय-ट्रायम्माण् गर्णासि स्वहारायणियाण् किट्यम्मां वेणाह्यं नो सम्मं पर्वजिता भवह २, धापिय-उवद्यम्माण् गर्णासि ने स्ववित्रा भवह २, धापिय-उवद्यम्माण् गर्णासि सगिणियाण् वा ना सम्ममणुपवादेता भवह ३, धापिय-उवद्यम्माण् गर्णासि सगिणियाण् वा पराणियाण् वा निग्मंथीण् (सिद्धं) बहिलेस्से भवह ४, मिन्ते-णाह्मणे वा से मणायो श्ववक्रमोदना, सेवि संगहीयमाहद्वयाण् गणावस्क्रमणे प्रण्याने ५॥ ——हाणांग सूत्र ५।११९॥

- (१) जिस गच्छ के म्राचार्य उपाध्याय भ्रयने गण में भ्राजा=
 स्पर्शना, धारणा=श्रद्धना भ्रौर प्ररूपणा भ्रयवा भ्राजा=विधिरूप
 भ्रादेश,धारणा=निषेधरूप भ्रादेश सम्यक् प्रकारनहीं देते श्रौर गण
 से पालन नहीं करवाते, जिसके मन में जो श्राए सो कर गुज़रे;
 जत्सूत्र प्ररूपणाएं चलती हों श्रौर विपरीताचरण किये जाते हों,
 कोई पूछने वाला न हो कोई रोकने वाला न हो, जहां सारणा
 वारणा न हो तो ऐसे गच्छ को छोड़ देना चाहिये।
- (२) जिस गच्छ के श्रिषकारिगण श्रपने गण में छोटों से वड़ों का श्रादर-मान श्रीर विनय-भक्ति नहीं करवाते, जिस गच्छ में छोटे वड़े का कोई लिहाज नहीं सर्वत्र श्रापा-धापी व्यापी हो तो ऐसे गच्छ को छोड़ देना चाहिये।
- (३) जिस गच्छ के श्रविकारिगण सावकों को शास्त्र-स्वाघ्याय नहीं करवाते तो उस गच्छ को छोड़ देना चाहिये।
- (४) जिस गच्छ के श्रधिकारिगण साब्वियों से (स्त्रियों से) श्रनुचित सम्पर्क रखते हों तो उस गच्छ को छोड़ देना चाहिये।

जिंद निरंथ सारणा वारणा य, पिंडचोयणा या गच्छुँमि ।
 सो उ ध्रमच्छो गच्छो, मोत्तव्वो संजमत्ये।हिं॥

(७) मन्तृत्वान-सामने स्नात एसी का, सामन त्वागत

्राहे होगर गुम्मान करना घरगुरमान नम्भोग है।

(=) कृतिनमं - वन्यना करना कृतिकसं नाम्भोग है। (६) त्यापृश्य-धाराष्ट्रमानी, यस्यमान, पीठमालक

चादि लागर हेना. जन्मार प्रथमण परिस्त्रापन करना ग्रीर किसी यनेन की जाना करने में सहायता देना इत्यादि सब

(१०) समीमरण-एक मकान में रहरना समीसरण-वेपापृत्य सम्भोग माना जाता है।

त्रक्षांग है।

(११) निगणा-एक कमरे में धासन लगाना, निगणा-

सम्मोग है।

(१२) क्या-प्रवन्ध-एक स्थान वेठ कर परस्पर वार्तालाण, विचार-विनिमय करला, कथा-प्रवन्ध-सम्भोग होता है।

इन सम्मोगों की इस कोटियां होती हैं—

(१) प्रथम कोटि में सबने सब तस्मीम गुले रहते हैं। (२) दूसरी कोटि में भक्तपान-सम्भोग, दिव्यप्रदान-सम्भोग

श्रीर बन्दना का सम्भाग-इन तीनों को छोड़ कर क्षेप नव

(३) तीसरी कोटि में उपिय-सम्भोग श्रीर वन्द हो जाता तम्भोग खुले रहते हैं। है और चार को छोड़ कर क्षेप स्राठ कुले रहते हैं। (४) चीघी कोटि में मञ्जिलियग्रहण सम्भोग म्रीर वन्द

होकर कुल ५ बन्द होते हैं और सात खुले रहते हैं। /...\ पारवरी कोटि में निकाय बन्द हो



ATT TO SEE THE PROPERTY OF THE निवासिक स्था-प्रदेशनामा को सोहमर देस ११

- (२) सन्तमकातो-सन्तनकातो हे गाम जन्मान क्षात्म प्रदान संस्थात कोर्ट कृतिसर्व संस्थात — वे
- क्षेत्र गुम्मोग गमन्त्र मात्र वह रहते है।
- (३) पासत्यादि पञ्चकुद्योल-दनमें उपरोक्त होन तथा ज्यपि नस्त्रोग मञ्जासिम्रणाल, निकास स्रोट मन्त्रात्मान — स्त्रोत गान का को द्वीद कर विशायक्य में में बार बाय होतार र ७ वन्द्र स्ति है गुरुषु समानस्त और गारित्र गुन्तीत है। तिरिकत दोष तीन से श्रुतसम्भोग समयाद-स्प हे होता है विन्तु ययाग्यस्य से स्रतन्त्रभाग, निष्यान्तरभाग स्रोर गन्या-प्रवच्य-सम्बोग — ये तीन स्रोट बन्द होगार मुल १० सम्बोग बन होते हैं और चारित्र कुरोल से संगोगरण नास्त्रोग और कुल ११ सन्त्रोग बन्द होते हैं केवल प्रधिकरणोपन्तमगरूप विवायुर्य सम्भोग जीवत मीमा तक गुला रहता है श्रीर नेप
 - (४) विसस्तोगी—विसस्मोगी दो प्रकार के होते हैं एक प्रयस्ति और दूसरा प्रप्रायश्चिती अर्थात् जो भूतानृसार सय-रेन्सव बन्द होते हैं। प्रायस्वत न तेता हो और वह जो तिसी दोप का नेवन प्राप्त हैं। तीन बार प्रायित्वत के जुवा हो ग्रोर फिर चतुर्व करते हुए तीन बार प्रायित्वत के जुवा हो ग्रोर फिर बार हती दोष का सेवन करके प्रायदिचल योग्य न होगार वाहिर किया गया हो, ऐसे अप्रायितितयों शोर प्रायदिवित्यों, आएर नारा के विसम्मोगियों से कोई सम्भोग नहीं होता। दोनों प्रकार के विसम्मोगियों से कोई सम्भोग प्राथित्वती, प्राथित्वतं कर चुकने पर सम्भोग योग्य होता है। (५) संवतीवर्ग-साध्वयों से, उत्सर्ग ग्रीर भ्रपवाद

अभिमत

"हन सुशील कैसे वनें ?"

यह सुन्दर कृति साधु-जीवन को उन्नत करने में बहुत ही उपयोगी श्रीर लामप्रद है। कुछ ही पृष्ठ पढ़ने से हृदय, ऐसी बहुनूल्य कृति के लिये लेखक के श्रम को वार २ सराहने लगा। आज के युग में ऐसे पुस्तक-रलों की और भी अधिक ग्रावश्यकता है। नवदीक्षित युवा मुनियों को तो इस से अनिगनत लाभ हो सकते हैं जो कि उन्हें संसार में पूज्य ही नहीं—आदर्श-मुनि भी सहज में ही बना सकते हैं। लेखक के पुनीत अथ च सराहनीय परिश्रम को यदि वे सार्थक करेंगे तो लेखक को ही नहीं, मुझे भी महानू हुई हुए विना न रहेगा। ऐसी उत्तम कृति को लिखने में महानू श्रम के लिये लेखक को पुनः पुनः धन्यवाद॥

—चन्दन मुनि पट्टी (भग्रतसर) विषयक वार्तालागरण कपाप्रवन्ध-सम्भोग के ग्रतिरिक्त ग्रीर कोई सम्भोग नहीं होता।

(६) गृहस्यवर्ग—गृहस्यियों से, अपवादरूप वाचना व छोड़कर, विधिपूर्वक पृच्छना आदि श्रुतसम्भोग के अतिरिष्धारम्भ के १० सम्भोग नहीं होते, अर्थात् पृच्छनादि श्रुसम्भोग, निपद्या-सम्भोग, और वार्तालापादि कथा-प्रवन्त सम्भोग—ये तीन सम्भोग होते हैं। गृहस्य-स्त्रियों से ये ती भी नहीं होते। पुरुपों में भी योग्य गृहस्थों से होते हैं सामान्यतया भगवान् का आदेश है कि 'गिही संथवं न कुण्य कुण्या साहूहिं संथवं —दश्वेकालिक सूत्र दा४३॥ तथा कि स्त्री-पुरुपों के संसर्ग से संयमी-जीवन और ज्ञान-ध्यान को क्ष पहुँचती हो जन नर-नारियों का सम्पर्क छोड़ दे चाहिये 'जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा किसणं नियच्छा नर-नारि पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू'। उत्तराध्ययन सूत्र १४।६॥

कल्पानुसार किसी साधक का दुःख निवारण करना श्रीर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की वृद्धि होतीं हो तथा धर्म-विनय लाभ होता हो तो अपवादरूप से इन उपरोक्त सभी कोटियों सम्भोगों में हेर-फेर भी हो जाता है।



अभिमत

"हन सुशील कैसे बनें ?"

यह सुन्दर कृति साधु-जीवन को छन्नत करने में बहुत ही उपयोगी धीर लामप्रद है। कुछ ही पृष्ठ पढ़ने से हृदय, ऐसी बहुमूल्य कृति के लिये लेखक के ध्रम को बार २ सराहने लगा। आज के युग में ऐसे पुस्तक-रलों की और भी अधिक ग्रावश्य-कृता है। नवदीक्षित युवा मुनियों को तो इस से अनिगनत लाम हो सकते हैं जो कि छन्हें संसार में पूज्य ही नहीं—आदर्श-मुनि भी सहज में ही बना सकते हैं। लेखक के पुनीत अध च सराहनीय परिश्रम को यदि वे सार्थक करेंगे तो लेखक को ही नहीं, मुझे भी महानू हुप हुए विना न रहेगा। ऐसी छत्तम कृति को लिखने में महानू श्रम के लिये लेखक को पुनः पुनः धन्यवाद॥

—चन्दन मुनि पट्टी (भम्उसर) विषयक वार्तालापरूप कथाप्रवन्ध-सम्भोग के अतिरिक्त और कोई सम्भोग नहीं होता।

(६) गृहस्थवर्ग—गृहस्थियों से, ज्रपवादरूप वाचना को छोड़कर, विधिपूर्वक पृच्छना आदि श्रुतसम्भोग के अतिरिक्त आरम्भ के १० सम्भोग नहीं होते, अर्थात् पृच्छनादि श्रुतसम्भोग, निपद्या-सम्भोग, और वार्तालापादि कथा-प्रवन्ध-सम्भोग—ये तीन सम्भोग होते हैं। गृहस्थ-स्त्रियों से ये तीन भी नहीं होते। पुरुषों में भी योग्य गृहस्थों से होते हैं। सामान्यतया भगवान् का आदेश है कि 'गिही संथवं न कुण्जा, कुण्जा साहूहि संथवं —दशवंकालिक सूत्र ६।५३॥ तथा जिन स्त्री-पुरुषों के संसर्ग से संयमी-जीवन और ज्ञान-ध्यान को क्षित पहुँचती हो उन नर-नारियों का सम्पर्क छोड़ देना चाहिये 'जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा किसणं नियच्छइ। नर-नारि पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं जवेइ स भिक्खू'॥ उत्तराध्ययन सूत्र १४।६॥

कल्पानुसार किसी साधक का दुःख निवारण करना ही श्रीर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की वृद्धि होती हो तथा धर्म-विनय का लाभ होता हो तो अपवादरूप से इन उपरोक्त सभी कोटियों के सम्भोगों में हेर-फेर भी हो जाता है।।



"हम सुशील कैसे वनें ?"

यह सुन्दर कृति साधु-जीवन को उन्नत करने में बहुत ही उपयोगी श्रीर लामप्रद है। कुछ ही पृष्ठ पढ़ने से हृदय, ऐसी बहुमूल्य कृति के लिये लेखक के श्रम को वार २ सराहने लगा। आज के युग में ऐसे पुस्तक-रतों की और भी अधिक त्र्यावश्यक्ता है। नवदीक्षित युवा मुनियों को तो इस से अनिगनत लाभ हो सकते हैं जो कि उन्हें संसार में पूज्य ही नहीं—आदर्श-मुनि भी सहज में ही वना सकते हैं। लेखक के पुनीत अथ च सराहनीय परिश्रम को यदि वे सार्थक करेंगे तो लेखक को ही नहीं, मुझे भी महान् हर्ष हुए विना न रहेगा। ऐसी उत्तम कृति को लिखने में महान् श्रम के लिये लेखक को पुनः पुनः धन्यवाद॥

—चन्दन मुनि पट्टी (भरतसर)